शब्द ब्रह्म

मई 2003

ज्ञान क्या है ? ज्ञान तो एक दर्पण है, जिसमें तुम देखोगे। क्या ? अपना असली चेहरा! किसी और का नहीं, अपना!

महाराज जी



हृदय से सत्संग, सेवा और इस ज्ञान का भजन करना
यही एक चीज़ है जो इस मन रूपी भैंस को बांध सकती है।
यह भैंस, और किसी चीज़ से नहीं बंधेगी।
लोग बड़ी कोशिशें करते हैं, बड़ी-बड़ी रस्सी बनाते हैं।
यह भैंस उन रस्सियों को ही खा जाती है।
इस भैंस को बांधने का एक ही तरीका है, और वह तरीका है
इस ज्ञान का अभ्यास!

महाराज जी

शब्द ब्रह्म

हिंदी मासिक

वर्ष 26 | अंक 5 | मई, 2003

- इस अंक में -

वार्षिक ग्राहक शुल्क

भारत/नेपाल (भारतीय)	:	रु० 100.00
विदेशों के लिए	:	US $50.00
एक प्रति	:	रु० 10.00

पत्रिका संबंधी पत्राचार हेतु पता :

संपादक

राज विद्या केन्द्र, छत्तरपुर, नयी दिल्ली - 110074
दूरभाष : 26654900, 26595565, 26595427
फ़ैक्स - 26654502; e-mail: duopro@vsnl.com

संपादकीय

अप्रैल अंक में हमारे प्रेमी पाठकों ने गोवा और लखनऊ के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में महाराज जी के प्रवचनों को ध्यान पूर्वक पढ़ा होगा और अच्छी तरह समझा होगा, ऐसी हमें आशा है। उसके बाद ज्ञान प्रचार के दूसरे चरण के उतरार्द्ध में महाराज जी ने 15 फरवरी से 23 फ़रवरी तक कोयम्बटूर, चेन्नई, मुम्बई, बैंगलोर व हैदराबाद — पांच नगरों के कार्यक्रमों में बड़े उत्कृष्ट और सरल ढंग से नये-नये विचारों से भरपूर प्रवचन किये और अपनी किस्म के निराले उदाहरण दिये। इन प्रवचनों में महाराज जी ने बड़े मनमोहक तरीके से ज्ञान प्राप्त व्यक्तियों और जिज्ञासुओं के लिए प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की है।

उनके पहले दो प्रवचन तो अंग्रेजी में हुए और शेष तीन हिन्दी में। इन प्रवचनों को भी हम समय-समय पर अपने सुधि पाठकों तक पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। ज्ञान प्रचार टूर की इस दूसरी किस्त में श्रोताओं की उपस्थिति लगभग 36-37 हजार रही। इस प्रकार भारत के पश्चिमी व दक्षिणी क्षेत्र में महाराज जी ने लोगों में एक नये उत्साह, जोश और उमंग का सैलाब प्रवाहित कर दिया, और जन-मानस में एक नई रूह फूंक दी। इतना ही नहीं, फ़रवरी महीने के अंतिम दिन, यानी 28 तारीख को नई दिल्ली स्थित सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों के लगभग 1500 विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया। भाग लेने वाले इन श्रद्धालु श्रोताओं की गोष्ठी को महाराज जी ने अंग्रेजी में संबोधित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य था, ऐसे लोग जो उच्च तबके वाले समझे जाते हैं, आम सभा में उपस्थित होने में हिचकिचाते हैं — जैसे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, विधान सभा और संसद सदस्य आदि — इस वर्ग के लोगों को वर्तमान मानव जीवन में ज्ञान और ज्ञान की उपादेयता से परिचित कराना। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह कार्यक्रम विशेष रूप से रखा गया, और इसमें बड़ी हद तक कामयाबी

हासिल हुई। साथ ही महाराज जी के दर्शन व प्रवचन से सभी उपस्थित जन बड़े प्रभावित हुए।

इसके बाद 8 मार्च को नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में महाराज जी ने ज्ञान प्रचार व प्रसार को एक अनूठा और प्रभावी आयाम दिया। सचमुच ज्ञान और ज्ञान-दाता का परिचय आम आदमी को कराने की दिशा में यह एक ऐतिहासिक कदम था। महाराज जी का मकसद समाज तक नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक मनुष्य तक पहुँचाना और उसके जीवन में एक नई चेतना और स्फूर्ति जगाने हेतु यह एक बड़ा ही सरल और सार्थक प्रयास था। और जिस प्रकार इस कार्यक्रम में अप्रत्याशित रूप से भारी संख्या में लोग भाग लेने के लिए आये, और दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों के जिज्ञासुओं और जन साधारण का विशाल जन-समुदाय अनेक भरी बसों और कारों के ज़रिये स्टेडियम के प्रांगण को भरता नज़र आया, वह अभूतपूर्व दृश्य था। सारे फाटकों पर भीड़ उमड़ पड़ी। और जो पुलिस कर्मी और अधीकारी सिक्योरिटी आदि के उद्देश्य से ड्यूटी पर थे, वे बड़े अचंभित हुए और घबड़ा गये कि किस प्रकार इस भारी जन समुदाय को नियंत्रण में रखा जायेग ? परंतु जब उन्होंने वहां पूर्ण शांत और अनुशासन-युक्त श्रोताओं को पहुंचते और भाग लेते हुए देखा तो वे सचमुच आश्चर्य चकित रह गये ! इतना जमावड़ा इन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। वहां लोगों ने बताया कि वे बराबर यहां ड्यूटी पर आते हैं, पर इतनी भारी संख्या में उपस्थित जन-समुदाय को उन्होंने कभी स्टेडियम में नहीं देखा, और न उन्हें इतना शांत वातावरण ही देखने को मिला। सारा स्टेडियम भर गया और बहुत से श्रद्धालुजन तो निराश होकर लौट गये। क्योंकि फाटकों को कई बार नियंत्रण रखने की दृष्टि से बंद कर दिया जाता था, और भाग लेने वाले आगंतुकों को मजबूरी में वापिस लौट जाना पड़ता था। इस प्रकार सैकड़ों की संख्या में लोग वापिस चले गये। स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था और उपस्थिति एक लाख से कहीं अधिक आंकी गयी।

इस कार्यक्रम का जिस प्रकार दिल्ली में स्वागत हुआ, इससे महाराज जी भी बड़े प्रसन्न थे। और उन्होंने कार्यक्रम के बाद अगला दिन फ़ॉलो-अप प्रोग्राम के लिए नियत करने की अनुमति दे दी, ताकि जो लोग ज्ञान संबंधी अधिक जानकारी चाहते थे वे अगले दिन राज विद्या केन्द्र दिल्ली में आयें। स्टेडियम में महाराज जी का अद्‌भुत प्रवचन सुन कर आने वाले जिज्ञासुओं की संख्या लगभग 20,000 आंकी गयी। महाराज जी ने सभी उपस्थित श्रोताओं के लिए बैठने का प्रबंध तीन स्थानों पर कराया, और स्वयं जा-जाकर लगभग 40,000 श्रोताओं को संबोधित किया, जिनमें ज्ञान-प्राप्त व्यक्ति भी शामिल थे। महाराज जी ने उन सबसे बातें कीं, लोगों की शंकाओं का समाधान किया, और प्रश्नोत्तर का भी मौका देकर सबको संतुष्ट किया। सभी श्रोतागण बड़े ही प्रभावित नज़र आये। इतना ही नहीं, उसी दिन महाराज जी ने शाम को पांच बजे राज विद्या केन्द्र के सत्संग ग्राउंण्ड में लोगों को एक और अवसर प्रदान किया, जिसमें महाराज जी ने ज्ञान प्रचार की विभिन्न गतिविधियों से उपस्थित जनों को अवगत कराया। इस कार्यक्रम में लगभग 35 हजार लोगों ने भाग लिया। महाराज जी ने यह भी घोषणा की वे पुनः इसी वर्ष नवम्बर महीने में भारत पधारेंगे और जगह-जगह पर वस्तुस्थिति को देखते हुए पब्लिक प्रोग्राम करेंगे,

(शेष पृष्ठ 32 पर)

कैसे होगी विश्व शांति?

महाराज जी

जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली

किसी ने हमसे कहा कि ''आप कैसे लायेंगे इस विश्व में शांति?'' हर एक मनुष्य एक-एक बल्ब है। यह स्टेडियम, यह पृथ्वी है। यह संसार है। अगर इसमें लाइट चाहते हो तो हर मनुष्य रूपी बल्ब को जलना पड़ेगा और जब वह प्रकाश अपने में से देगा, तब जा करके सारे स्टेडियम में प्रकाश ही प्रकाश उत्पन्न होगा। लोग बोलते हैं, ''यह तो असंभव बात है।'' चलो, हम मानते हैं, असंभव बात है — पर कोशिश तो कर लें! अगर हमारी कोशिशें सारी फ़ेल हो गयीं तो कम से कम पता तो लग जाएगा।

आज हम लोगों को सुनने का मौका मिला है। काफ़ी लोग यहां एकत्रित हुए हैं और सुनना चाहते हैं। किस चीज की चर्चा, किस चीज की बात? तो सबसे पहले मैं आप लोगों को यह याद दिलाना चाहता हूं कि जिस चीज़ की मैं चर्चा कर रहा हूं वह आप में है। आपसे दूर नहीं है, वह आपके अंदर है। जिस चीज़ की मैं चर्चा करता हूं, वह आपको बाहर नहीं मिलेगी। वह आपके अंदर है। लेकिन इतना कहने से कि वह अंदर है, यह बात फिर भी लोगों की समझ में नहीं आती है। यह सुन ज़रूर रखा है कि अंदर है, परंतु यह तो वैसी ही बात हो गयी कि नाम सुन रखा है कि पेरिस में आइफ़िल टावर है, पर कभी उसे देखा नहीं। लेकिन अगर कोई चर्चा करे तो कहेंगे, ''हां, नाम सुना हुआ है हमने, परंतु प्रत्यक्ष तो हमने देखा नहीं कि वह क्या चीज है, कैसी लगती है!'' हो सकता है फ़ोटो में देखी हो, परंतु उस चीज़ का रंग वहां खड़े होकर के ऊपर की तरफ देखना, वह दूसरी बात है। फ़ोटो तो छोटी सी होती है। फ़ोटो में देखना तो साधारण बात है।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूं। उदाहरण यह है कि लोग जब शॉपिंग के लिए जाते हैं, बाज़ार की तरफ जाते हैं तो एक लिस्ट बनाते हैं कि किस-किस चीज़ की ज़रूरत है। क्योंकि जा रहे हैं तो वे ही चीज़ें खरीदें, जिनकी ज़रूरत है। जो पहले ही घर में हैं, उन चीज़ों को खरीदने से क्या फ़ायदा? तो लोग लिस्ट बनाते हैं, देखते हैं, दूध है? ''हां, है, दूध बहुत है अभी। अभी ज़रूरत नहीं है।'' नमक है? ''हां, बहुत नमक है, अभी ज़रूरत नहीं है। हल्दी कम हो रही है, हल्दी ज़रूर लाना।'' आप समझिए कि उन चीज़ों की लिस्ट बनाई जाती है, जिन चीज़ों की कमी है या यह अपेक्षा है कि वे जल्दी ही कम हो जायेंगी, इसलिए उन चीज़ों को खरीदा जाए। अगर नमक बहुत है घर में, पर और नमक खरीदते रहे तो क्या होगा? बीवी ने अगर लिस्ट में लिख दिया नमक, और

आप ले आये नमक। और फिर घर में देखा कि घर भरा हुआ है नमक से, तो कहेंगे, ''भाग्यवान, पैसा खराब करती हो!''

पैसा एक ऐसी चीज़ है कि लोग पैसा खर्च करने से डरते हैं। पैसा खर्च नहीं करना चाहते। उनको मालूम है वह उनकी मेहनत की कमाई है। पैसा खर्च होगा तो अच्छी बात नहीं होगी। मैं आपको सिर्फ़ उदाहरण दे रहा हूं। आप भी एक चीज़ खर्च कर रहे हैं, और जिस चीज़ को आप खर्च कर रहे हैं, वह पैसे से भी बहुत मूल्यवान है। किसी के पास अगर stock trading (स्टॉक व्यापार) के सिलसिले में स्टॉक हैं तो हो सकता है कि स्टॉक गिर जाएं। तो लोग कहते हैं, ''अभी इन्तज़ार करेंगे। हो सकता है कि भाव ऊपर चले जाएं।'' क्योंकि इस व्यवसाय में भाव ऊपर-नीचे होता रहता है। कभी ज्यादा अमीर हो गए, कभी ज्यादा गरीब हो गए। परंतु एक चीज़ है जिसका इतना मूल्य है कि अगर कोई एक भी उसे खरीदना चाहे — एक, सिर्फ एक! दो नहीं, दस नहीं, बीस नहीं — एक, तो खरीद नहीं पाएगा!

मैं किस चीज़ की चर्चा कर रहा हूं? आपके स्वांस की चर्चा कर रहा हूं मैं। और जब भी आप किसी चीज़ को खरीदने के लिए जाते हैं — इस दुनिया में हम चीजें खरीदते हैं, ऐसी बात नहीं है। मान-सम्मान खरीदने की इच्छा रहती है, मेहनत करते हैं, पैसा कमाते हैं, पार्टियों में जाते हैं। कुछ न कुछ करते रहते हैं, ताकि मान-सम्मान बढ़े। तो एक तरह से उसको खरीदने की कोशिश करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारी जिंदगी के अंदर आनंद ही आनंद हो। उसको खरीदने की कोशिश करते हैं — पैसों से नहीं! ये स्वांस रूपी पैसे, ये स्वांस रूपी हीरों से हम इन चीज़ों को खरीदते हैं। अब बात यह है कि जिस आनंद को आप बाहर खरीदने के लिए जाते हैं, वह आनंद तो आपके अंदर पहले ही विराजमान है। इसका मतलब है, नुकसान हो रहा है। उस चीज़ को खरीद कर लाया जा रहा है, जो पहले ही बहुत पड़ी हुई है। परंतु उसका इस्तेमाल नहीं हो रहा है।

ये सीधी-सादी बात है। क्योंकि जो भी मैं सुनाता हूं, उसको अगर तीन हिस्सों में बांटा जाए, तो पहला हिस्सा यह होगा कि क्या आप जानते हैं कि आप में क्या है? क्या आप समझते हैं कि आपके ऊपर बनाने वाले ने किस प्रकार से कृपा की है? अथाह, जिसका कोई अंत नहीं है। अथाह कृपा से आपको यह मनुष्य शरीर मिला है। उधर वहां कौएं हैं, वे कौएं उड़ रहे हैं। लोग कहते हैं — ''क्या उनको भी?'' मुझे नहीं मालूम। मैं कौआ नहीं हूं, मुझको नहीं मालूम। आप अगर जानना चाहते हैं तो बात कीजिए। हम बात करते हैं मनुष्य शरीर की। लोग बात करते हैं जानवरों की, ''अजी, गधे को भी?'' हमको नहीं मालूम। आप जाकर पूछिए न! आपको पता लग जाए तो हमको भी ज़रा ईमेल कर देना, फैक्स कर देना! हमको भी बता देना। हम बात करते हैं, जीवित, जीते-जागते मनुष्यों की, और लोग बात करते हैं, क्या? कि जब वे मर जाएंगे, तब क्या होगा? मैं लोगों से कहता हूं, ''मुझे नहीं मालूम।'' पर यह शर्त बना लेता हूं कि ''अगर मुझसे पहले तुमको मालूम पड़ जाये, तो तुम मुझे बता देना। मुझे अगर तुमसे पहले मालूम पड़ जाये, तो मैं तुमको बता दूंगा। *आज* की बात कर रहा हूं मैं। क्योंकि यह स्वांस आया, तो आज आया। कल आयेगा? ये अगर कृपा रही — जिस कृपा के कारण आज आया, तो कल भी आयेगा, पर मुझको मालूम



नहीं। क्या बढ़िया प्रकृति बनाई है कि धन तो दे दिया, पर कितना है, ये नहीं मालूम! और खर्च तुम करोगे, चाहे तुम चाहो या न चाहो — खर्च ये होगा, परंतु किस चीज़ पर खर्च करना है, यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है। अगर उन चीजों में खर्च किया जिनसे मुनाफ़ा हो गया ...

यहां बिज़नेस वाले भी होंगे। वैसे तो सभी लोग पैसा बचाने की कोशिश करते हैं, क्योंकि मुनाफ़ा और घाटा सबको मालूम है। मैं मुनाफ़े और घाटे की बात करता हूं। क्योंकि जो निकल गया वह निकल गया। जो चला गया वह चला गया। अगर बनाने वाला सिर्फ़ इतनी ही कृपा कर देता कि यह बता देता कि इतने हज़ार मिलेंगे, इससे एक ज्यादा नहीं मिलेगा तो कम से कम मैं गिनती तो करता रहता? फिर मुझको यहां आकर आपको कुछ सुनाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। किसी को भी आपको याद दिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। क्योंकि आप एकाउंट बना लेते — "हां, अब सिर्फ दो हज़ार बाकी रह गये। अब एक हज़ार बाकी रह गये।" तब तो शायद आप रात को सोना ही न बंद कर दें। क्योंकि जिसमें लगना है, तो लगना है। इस जीवन को सफल करना है, करना है। और किसी भी चीज़ की परवाह नहीं। बस, यह जीवन सफल हो। परंतु बनाने वाले ने स्वांस तो दे दिया, पर यह नहीं बताया कि कितने मिलेंगे। जब नहीं बताया कि कितने मिलेंगे, तो यह भी नहीं मालूम कि कितने चले गये। यह नहीं मालूम, कितने रह गये। इसका न कोई खाता है। कोई CPU (कंप्यूटर का केंद्रीय संचालन यूनिट) लगा नहीं सकते, कोई एकाउंटैंट (लेखाकार) उसे बना नहीं सकता। कोई कुछ नहीं है, पर आ रहा है। और यह आप सब लोगों को मालूम है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि यह आना बंद हो

जायेगा। अच्छा, यह बात लोगों को पसंद नहीं है। हम जब यह बात करते हैं, तो लोग कहते हैं — "आप यह बात क्यों करते हैं जी? यह तो अच्छी बात नहीं है।" भई, मानते हैं अच्छी बात नहीं है, परंतु होगा तो सही!

तीन बातें हैं — एक तो जन्म हुआ, एक जीवन है, एक अंत होगा। एक हो गया — इसीलिए तो यहां बैठे हैं। अगर जन्म ही नहीं हुआ होता, तो यहां आते कैसे? एक हो गया है, एक हो रहा है, एक होने के लिए बाकी है। तो जो है, मैं कहता हूं कि वह इतना सुंदर है कि अगर हम उसको अपने जीवन में अपनाने लगें, उसका स्वागत होने लगे — आपका स्वागत हुआ, यहां एम.सी. ने आकर इस जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आपका स्वागत किया। मैं भी आपका स्वागत करता हूं। यहां नहीं, आपकी ज़िंदगी में! हो सकता है, किसी ने नहीं किया हो।

जन्म दिवस के ऊपर लोग केक बनाते हैं। केक के ऊपर मोमबत्ती लगाते हैं और जिसका जन्म दिन है, वह फूंक मार कर उन मोमबत्तियों को बुझाता है। आपको मालूम है क्यों? अगर दस साल का बच्चा है तो इसका मतलब है कि दस साल उसके निकल गये — वह गये! जब दस साल का कोई हो जाता है तो दस मोमबत्ती लगाते हैं, दस को फूंक मार के खत्म करते हैं, कि दस साल गये, और सब लोग ताली बजाते हैं! बात तो है रोने की। "ये गये, अब ये वापिस नहीं आने के। फिर मोमबत्ती अगर जला दो, तो उससे भी वापिस नहीं आयेंगे।" यह समझने की बात है। तो एक सबसे बड़ी बात यह है कि क्या आप अपने जीवन में इस चीज़ को स्वीकार करते हैं कि आपके अंदर ही परमानंद है? परम आनंद आपके अंदर है?

दूसरी बात, इसको जानने की प्यास आपको कैसे लगी? इसके बारे में भी आप सुनिए — यह आपकी करनी नहीं है। यह प्यास, इस आनंद की प्यास मनुष्य के अंदर, मनुष्य को स्वाभाविक रूप से है। यह आपका स्वभाव है। इसको आप बदल नहीं सकते। जब खुश होते हैं तो मुस्कराते हैं। इसको आप बदल नहीं सकते। जब आपको दुख होता है तो आप रोते हैं। इसको आप बदल नहीं सकते। कोशिश करते हैं लोग! अगर कोई मज़ाकिया बात हो गयी, किसी की पैंट फट गयी, या ऐसी कोई चीज़ हो गयी, और कोई बड़ा आदमी हो तो लोग हँसना नहीं चाहते, कोशिश करते हैं सीरियस (गम्भीर) रहने की। पर जब बात ज्यादा ही मज़ाकिया हो गयी तो फिर सीरियस-वीरियस सब खत्म, और फिर ठठाकर हँस देते हैं। यह किसने सिखाया आपको? यह बात भी स्वाभाविक है। यह आपका स्वभाव है — हँसना। यह आपका स्वभाव है कि जब आप सुंदर चीज़ के दर्शन करते हैं तो आपको आनंद मिलता है। जब नाक में दुर्गंध जाती है तो "ऊंह" — यह आपका स्वभाव है। और जब नाक में सुगंध जाती है तो "हूंऽऽऽ!" यह करना भी आपका स्वभाव है। इसको सीखने की ज़रूरत नहीं रही। जब भूख लगती है, और थोड़ी-सी भी खाने की हवा अगर नाक के अंदर जाए तो उस तरफ़ रुख होता है — "आहा-हा-हा! कितना बढ़िया!" और पेट भी घुर-घुर करने लगता है। यह सिखाने की ज़रूरत नहीं है, सीखने की ज़रूरत नहीं है। इसके लिए स्कूल जाने की ज़रूरत नहीं है, यह आपका स्वभाव है।

समझो आप अपने स्वभाव को! क्योंकि अगर आप अपने स्वभाव को नहीं समझ पाये तो यह तो

लोग मुझसे पूछते हैं कि ''क्या आप अपने आप को भगवान कहते हैं?'' मैं कहता हूं, ''कभी नहीं! भगवान मेरे अंदर ज़रूर है, जैसे तुम्हारे अंदर है।'' लोग कहते हैं, किसी ने हमसे कहा कि ''आप कैसे लायेंगे इस विश्व में शांति?'' तो मैं भी मनुष्य हूं और तुम भी मनुष्य हो। और जब तक मनुष्य, मनुष्य का आदर करना नहीं सीखेगा, तब तक शांति, बाहर की शांति इस संसार के अंदर संभव नहीं है। और अगर मनुष्य, मनुष्य का आदर करना सीखना चाहता है तो सबसे पहले उसको अपना आदर करना पड़ेगा, अपने स्वांसों का आदर करना पड़ेगा, अपनी ज़िंदगी का आदर करना पड़ेगा। और जब वह उस आदर को करना शुरू करेगा तब वह दूसरे का भी आदर करेगा, और तभी वह शांति संभव है।

वैसी ही बात हो जायेगी कि आपकी गाड़ी तो चल दी, पर यह कहां जा रही है, यह नहीं मालूम। मुसाफिर तो बैठा हुआ है, पर कहां उतरना है — कहां से चढ़े, यह तो मालूम है, पर यह कहां जा रही है, यह नहीं मालूम। हवाई जहाज़ चल दिया और यह नहीं मालूम कि कहां जा रहे हैं। कहीं जाकर यह रुकेगा, और वहां देखेंगे तो कहेंगे, ''हम यहां कैसे आ गये?'' थोड़ा-बहुत अगर समझना था तो पहले ही समझते कि देख करके बैठना चाहिए! तो आपका स्वभाव क्या है? आपका स्वभाव है आनंद से, परमानंद से प्रेम करना। आपका स्वभाव है इस जीवन को सफल बनाना। चाहे आप न भी बनाना चाहें, फिर भी यह आपका स्वभाव है। इसको आप बदल नहीं सकते। कुत्ते का स्वभाव है भौंकना। उसको सिखाने की कोशिश करो — ''भई, अंग्रेजी में भौंको। हिंदी में भौंको। प्रेम से भौंको।'' तो क्या फ़ायदा? और कुत्ते का तो ये भी स्वभाव है कि तुम्हारी तरफ़ देख करके वो कहेगा, ''तुम क्यों नहीं भौंकते हो?'' सबके अपने-अपने स्वभाव हैं और तुम्हारा स्वभाव है कि यह जीवन सफल हो। तुम्हारा स्वभाव है कि मैं उस परमानंद को अपनी जिंदगी के अंदर पाऊं — यह मेरा स्वभाव है, तो मैं अपने स्वभाव को समझूं। तो ये एक बात और है।

और तीसरी बात, कि मैं अपने स्वभाव को समझूं, अपनी प्यास को समझूं। क्योंकि बिना प्यास के पानी की कोई कीमत नहीं है। जहां प्यास लगी, तो पानी की कीमत अपने आप पता हो जाती है। तो यह एक प्रश्न बनता है कि क्या आपको उस परमानंद की प्यास है या नहीं? अगर है और आप अपनी प्यास को पूरा करना चाहते हैं तो मैं आपकी मदद कर सकता हूं।

लोग पूछते हैं मुझसे, ''आप ये क्यों कर रहे हैं? ये आप क्यों कर रहे हैं? पैसे के लिए कर रहे हैं?'' वही बात, कि सबसे अनमोल चीज को खुद खराब कर रहे हैं। उसमें किसी को कोई दिक्कत नहीं है, परंतु चार पैसे के लिए लोग कहते हैं, ''ये आप पैसे के लिए कर रहे हैं?'' हम कहते हैं, हम पैसे के लिए नहीं कर रहे हैं। हम पैसे के लिए यह नहीं कर रहे हैं। ''फिर आप क्यों कर रहे हैं?'' मैं बताता हूं, मैं क्यों कर रहा हूं। इसको मैं कहता हूं — Radio syndrome. रेडियो पर गाना आ रहा है। एक volume पर गाना आ रहा है। आ रहा है, आ रहा है, आप सुन रहे हैं।

पर वहां और लोग हैं, उनमें कोई सुन रहा है, कोई नहीं सुन रहा है। अगर आपके मनपसंद का गाना आ गया तो क्या होगा? रेडियो को घुमा कर उसकी आवाज तेज़ कर दी जायेगी। क्यों? चल तो पहले ही रहा था! परंतु जब ऐसी चीज मिल जाती है जो मनपसंद हो, जो हृदय पसंद हो तो उसकी चर्चा सुनने-सुनाने में अच्छी लगती है।

देखो न, दुल्हन को सजधज के आने की क्या जरूरत है? मैं सोच रहा था, क्योंकि मैंने एक मैगज़ीन देखा तो उसमें दुल्हन के लिए बढ़िया-बढ़िया कपड़े दिये हुए थे। तो जब मैंने देखा तो मैंने सोचा कि दुल्हन को सजधज कर आने की क्या जरूरत है? क्योंकि जिसके साथ शादी हो रही है, उसके साथ तो तय हो गयी है। जिसके साथ शादी हो रही है, वह तो यही कहेगा कि "तू हमेशा ही ऐसी लग।" तो यह तो संभव होगा नहीं। तो फिर यह दुल्हन क्यों सजधज कर आती है? किसके लिए? शादी तो हो रही है उससे, जो उसका पति होगा। पर सजधज रही है —यह किसके लिए? जो बराती वहां आये हुए हैं। दूल्हा क्यों सजधज रहा है? क्या दुल्हन के लिए? वह तो बेचारी शर्म के मारे देख भी नहीं रही है। ऊपर घूंघट है और नीचे ही देख रही है। अगर उसको कोई पकड़ कर भी लाता है, बैठाता है तो वह क्यों सजधज रहा है? दुल्हन के लिए नहीं, बरातियों के लिए। क्योंकि कोई चीज अच्छी हो, उसमें सुंदरता हो, तो वह देखने में अच्छी लगे — यह हमारा स्वभाव है।

जब मुझे मेरे गुरु महाराज जी से यह ज्ञान प्राप्त हुआ तो मुझे भी यह अच्छा लगा और क्योंकि मुझे यह अच्छा लगा तो मैं इसका प्रचार कर रहा हूं। ज़ोर-ज़ोर से बोलता हूं। लोग कहते हैं, "आप इतना ज़ोर से क्यों बोलते हैं? इतना ज़ोर से क्यों बोलते हैं?" अगर मैं इससे भी ज्यादा ज़ोर से बोल सकूं तो उससे भी ज्यादा ज़ोर से मैं बोलूंगा। लोग कहते हैं, "आपको धीरे-धीरे बोलना चाहिए।" क्यों? अगर मैं कोई स्पीच पढ़ता तो धीरे-धीरे भी बोल सकता था। पर मैं स्पीच नहीं पढ़ रहा हूं। मैंने स्पीच याद नहीं की है। मैं हृदय से बोलता हूं। जब से मैं बोलते आ रहा हूं, मैं हृदय से ही बोलते आ रहा हूं। क्योंकि अपनी ज़िंदगी के अंदर मैंने इस बात को समझा है कि मेरा एक और हिस्सा है। और मेरी एक ज़िम्मेदारी है। मेरे बच्चे भी हैं और अभी कुछ ही हफ्तों में मेरी सबसे बड़ी लड़की की शादी होने वाली है। मेरी अनेक ज़िम्मेदारियां हैं और अपनी जिम्मेदारियों को मैं निभाता हूं। परंतु सारी ज़िम्मेदारियों के बावजूद मैं उस चीज़ को नहीं भूलना चाहता जो मेरी सबसे असली ज़िम्मेदारी है। सबसे असली ज़िम्मेदारी! अगर मैं किसी का ऋणी हूं, तो मैं स्वांस का ऋणी हूं। इसका कर्ज है मेरे ऊपर! ये स्वांस आया, और आज अगर मैं हरा रंग देख सकता हूं, पीला देख सकता हूं, लाल देख सकता हूं, बोल सकता हूं, हँस सकता हूं, रो सकता हूं तो इसलिए, क्योंकि मेरे अंदर यह स्वांस आया।

अगर मेरे अंदर भगवान की तरफ प्रेरणा जागती है तो इसलिए जागती है, क्योंकि मेरे अंदर यह स्वांस आया। अगर आज मेरा कोई भाई है तो वह इसलिए है, क्योंकि मेरे अंदर वह स्वांस आया। अगर आज मेरे बच्चे हैं तो वह इसलिए हैं, क्योंकि मेरे अंदर स्वांस आया। अगर आज मैंने किसी चीज़ को हासिल किया है तो वह इसलिए हासिल किया है, क्योंकि मेरे अंदर स्वांस आया। और जिस दिन यह स्वांस आना बंद हो जायेगा, न मैं किसी का बाप रहूंगा, न मैं किसी का भाई रहूंगा;

प्यास लगी है, तो पीओ! हम तो यह भी नहीं कहते हैं कि हमारे पास ही आओ। जाओ, जहां जाना चाहते हो, जैसे जाना चाहते हो, जैसे इस प्यास को बुझाना चाहते हो, इसे बुझाने की कोशिश करो! यह तुम्हारा धर्म है कि यह प्यास बुझे। और अगर कहीं नहीं बुझी तो हम हैं। हम यह नहीं कहते हैं कि ''बस आ जाओ, आ जाओ!''

न मेरे लिए कोई हरा रहेगा, न मेरे लिए कोई पीला रहेगा; न मेरे लिए कोई स्वाद रहेगा, न मेरे लिए कुछ रहेगा। और मेरा यह सौभाग्य रहा है कि किसी ने मेरी ज़िंदगी के अंदर यह कहा कि ''तुम अंदर की तरफ़ मुड़ो और अंदर की तरफ़ देखो कि तुम्हारे अंदर क्या है,'' और मुझे एक ज्ञान रूपी दर्पण दिया, कि ''तुम देखो, समझो। तुम अपनी जिंदगी के अंदर जिस प्यास को महसूस करते हो, उस प्यास को बुझाने की कोशिश करो।

मुक्ति की बात आती है। लोग हमसे आकर कहते थे, ''महाराज, हमारी मुक्ति कैसे होगी?'' मैं एक उदाहरण दे रहा था। एक आदमी कटघरे में बंद है, और एक बार मेरे साथ यह हुआ भी। मुझे एक जेल में प्रोग्राम करने के लिए बुलाया गया। मैं बहुत छोटा था उस समय। तो गया, जेल में मैं गया। सारे कैदी वहां इकट्ठा हो रखे थे और मैं सुनाने लगा। मैंने कहा कि ''भाई, एक दिन तो तुम्हारी मुक्ति यहां से ज़रूर होगी।'' वे इतने खुश हो गये सब के सब कैदी, कि ताली बजाने लगे! उन्होंने सोचा कि मैं कहीं बात कर रहा हूं यही कि ''यहां से छूटकर!'' नहीं, बात कर रहा था मैं ultimate (परम) मुक्ति की। जेल को नहीं, संसार को छोड़ कर! तो लोग कहते हैं न, मुक्ति, मुक्ति। मैं कहता हूं कि अगर मुक्ति कोई चीज़ है तो वह जीते-जागते मिलनी चाहिए, ताकि मैं कम से कम देने वाले से यह तो कह सकूं कि मिल गयी या नहीं मिली? यह कैसी मुक्ति कि मेरा मुंह तो अब चल नहीं रहा है, बोल तो मैं सकता नहीं कि मुक्ति मिली या नहीं मिली?

लोग कहते हैं, ''शांति चाहिए तो ये सब कुछ छोड़ दो, त्याग कर दो!'' अगर मैं सब कुछ त्याग कर ही दूं तो मैं फिर शांति का क्या करूंगा? समझो न बात को? जब कुछ है ही नहीं, जब कुछ भी नहीं है तो मैं शांति का क्या करूंगा? अरे, शांति चाहिए तो मुझे उसी प्रकार शांति चाहिए कि मैं युद्ध भी करता रहूं और जो चीज़ है मेरे अंदर, मैं उसका आनंद भी लेता रहूं। ऐसी शांति चाहिए। तो वह कैसे मिलेगी? तो लोग बात करते हैं शांति की। आज आप लोगों ने ये भजन भी सुना, शांति के बारे में। ठीक है, लोग 'शांति, शांति, शांति' कहते हैं। लोग समझते हैं कि अगर लड़ाइयां बंद हो गयीं तो शांति हो जायेगी। कौन सी लड़ाई? कितनी लड़ाइयां हैं? आप जानते हैं, कितनी लड़ाइयां हैं? अरे, देश लड़ते हैं, ये भी लड़ाई है। परिवार लड़ते हैं, ये भी लड़ाई है। पर एक और भी लड़ाई है। अभी तक तो आपने देखा होगा, और आप समझते होंगे कि लड़ने के लिए दो चाहिए। पर बात बिल्कुल गलत है। लड़ने के लिए एक ही बहुत है! क्योंकि मनुष्य ऐसा है कि वह अपने आप से लड़ सकता है। और जो लड़ाई मनुष्य अपने आप से लड़ता है, वह बहुत ही गंभीर लड़ाई है। वह सबसे बुरी लड़ाई है। उस लड़ाई से जीतना बहुत मुश्किल है। बताऊं क्यों? क्योंकि जब खुद ही से लड़ रहे हैं तो अगर जीतोगे तो दूसरा कौन हारेगा? तुम्हीं जीतोगे और तुम्हीं हारोगे। वह लड़ाई ऐसी है, जिसमें जीतना मुश्किल

नहीं है, क्योंकि अगर तुम्हीं जीत गये तो तुम्हीं हार जाओगे। और वह लड़ाई चलती है कब? दिन और रात! दिन और रात वह लड़ाई चलती है। और उसमें क्या मारा जा रहा है? यह स्वांस मारा जा रहा है। वह स्वांस, जो सबसे, सबसे, सबसे बड़ा प्रसाद है, बड़ा आशीर्वाद है, वह मारा जा रहा है। और अगर ये निकल गया, हाथ से ये मौका निकल गया और इस ज़िंदगी के अंदर अपने जीवन को सफल नहीं कर पाये...

और लोग कहते हैं कि दूसरा जीवन मिल जायेगा। जब मैं कहता हूं कि ये ही है, तो यह बात भी लोगों को पसंद नहीं है। कहते हैं, ''नहीं, नहीं, नहीं!'' और मैं जानता हूं कि क्यों कहते हैं कि नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। इसलिए कि यह निकल गया, इस बात को स्वीकार करना बहुत मुश्किल है। यह अच्छी बात है, अगर इसको इस प्रकार स्वीकार किया जाए कि एक और मिल जायेगा तो आज की जो त्रुटि है, कल की जो त्रुटि है, उससे पहले दिन की जो त्रुटि है — जो कुछ भी फेंक दिया, कम से कम यह आशा बंध जाती है कि अगले जन्म में आकर सब कुछ ठीक कर देंगे। ना! लोग कहते हैं, ''ये मालूम करने की कोशिश करो कि तुम पिछले जन्म में क्या थे?'' तो मैं उनसे कहता हूं कि बैंक में जाओ और कहो कि आपने करोड़ों-करोड़ों रुपये पिछले जन्म में deposit (जमा) किए थे। आज इस जन्म में वो चाहिए।'' तो वे चपरासी को बुलाएंगे और आपको पकड़ करके बैंक के बाहर फेंक देंगे। क्यों? क्योंकि बैंक वालों को मालूम है कि ऐसी कोई चीज नहीं है। अगर आप बैंक वालों के पास जाकर ये कहें कि ''हां भई, ये ले लो पैसे, और जो इसका सूद है, वह अगले जन्म तक चलता रहेगा। मैं पैसे निकालूंगा नहीं, तो मेरे को वो (पैसे) ऐडवान्स में ही दे दो।'' तो कोई नहीं देगा, क्योंकि यह अब की बात है। और सारे बिज़नेस में आज की बात होती है, अब की बात होती है। और आपके जीवन में भी आज की बात होनी चाहिए, अब की बात होनी चहिए। तो यही बात मैं कर रहा हूं कि अपना यह जीवन सफल बनाओ।

लोग कहते हैं कि ''फिर आप क्या कर सकते हैं?'' मैं आपकी मदद कर सकता हूं। बस! मैं सिर्फ़ इतनी ही चीज़ कर सकता हूं। आपकी मदद कर सकता हूं! और वह भी तब, जब आप चाहें। फिर लोग हमसे कहते हैं, ''दे दो जी, दे दो!'' हम कहते हैं, ''नहीं, जब तक अपनी प्यास को नहीं समझोगे, तब तक तुमको कुछ नहीं मिलेगा। अपनी प्यास को समझो। समझने की कोशिश करो।'' लोग कहते हैं, ''दे दो जी, दे दो'' क्योंकि इसकी आदत है। जो चीज़ पसंद आ गयी, वह बाज़ार में जाकर खरीद ली। हम लोगों को यही तो समझाते हैं कि हम यहां कुछ बेचते नहीं हैं। यह ज्ञान बिकने के लिए नहीं है। आपको कुछ खरीदना नहीं है, यह तो समझ की बात है। समझने की कोशिश करो कि यह मनुष्य शरीर क्या है? समझने की कोशिश करो कि स्वांस क्या है? समझने की कोशिश करो कि आपको क्या मिला है? तभी आप अपना जीवन सफल कर पायेंगे।

प्यास लगी है, तो पीओ! हम तो यह भी नहीं कहते हैं कि हमारे पास ही आओ। जाओ, जहां जाना चाहते हो, जैसे जाना चाहते हो, जैसे इस प्यास को बुझाना चाहते हो, इसे बुझाने की कोशिश करो! यह तुम्हारा धर्म है कि यह प्यास बुझे। और अगर कहीं नहीं बुझी तो हम हैं। हम यह नहीं कहते हैं कि ''बस आ जाओ, आ जाओ।''

कल, एक समय निर्धारित किया गया है कि जो लोग इसके बारे में और अधिक सुनना चाहते हैं, वे आयें। मैं भी उपलब्ध रहूंगा। और जब यह समय बना, तो लोगों ने कहा, ''जी कितने आदमी आने चाहिए?'' तो मैंने कहा कि जितने कम आएं उतना ही अच्छा है। अगर हमारी यही इच्छा होती कि हमको बेचना है तो हम कहते कि ''ले लो जी, ले लो जी, ले लो जी!'' पर यह बिकने के लिए नहीं है। हम यह भी नहीं कहते कि हम ही से लो। हम कहते हैं, ''प्यास को बुझाओ। खोजो, और अगर तुम्हारी प्यास नहीं बुझी तो हमारे कुएं में पानी है। हमको मालूम है। हम बुझा सकते हैं उस प्यास को!'' और यहां हमेशा ही यह बात रही है कि बात अच्छी लगे तो ठीक है, अच्छी नहीं लगे तो कोई बात नहीं।

यहां आपने दो स्पीकर्स (वक्ताओं) को सुना। कम से कम एक स्पीकर बात कर रहा था कृष्ण की, एक बात कर रहे थे बुद्ध भगवान की। मैं पीछे खड़ा-खड़ा सोच रहा था कि मेरा तो कभी भगवान कृष्ण से परिचय हुआ नहीं। मैं इस बात को आदर से कह रहा हूं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि वे नहीं थे। पर मेरा उनसे परिचय नहीं हुआ है। बुद्ध भगवान से भी मेरा कभी परिचय नहीं हुआ। उनकी मूर्तियां मैंने देखी हैं। भगवान कृष्ण की भी मैंने मूर्ति खूब देखी हैं, भगवान कृष्ण की फ़ोटो मेरे आफ़िस में भी है, मेरे घर में भी है। भगवान बुद्ध की फ़ोटो, बल्कि मूर्ति हमारे घर में है। परंतु मैं एक बात नहीं भूल सकता कि जब भूख लगती है तो मैं अपने किचन (रसोई) में जाता हूं और कहता हूं, ''कुछ खाने के लिए है?'' किताबें वहां बहुत सी रखी हैं, पर मैं जाकर उन किताबों में से खाना प्राप्त नहीं कर सकता हूं। जब भूख लगती है तो मुंह में डालने के लिए कोई चीज़ चाहिए, आंख में डालने के लिए नहीं। जब भूख लगती है तो मुंह में चबाने के लिए कोई चीज़ चाहिए। उसी प्रकार जब मुझको अंदर की भूख लगी है तो चाहे मेरी जितनी भी आस्थाएं हों, मैं जिस भी धर्म को मानना चाहूं मैं मान सकता हूं, पर इसका यह मतलब नहीं कि मैं भूखा रहूं।

धर्म सिखाता है कि किस तरीके से रहना चाहिए। किसी ने मुझसे पूछा कि ''आप जो बताते हैं उसमें और धर्म में क्या अंतर है?'' हमने कहा कि भाई, धर्म सिखाता है मरने के बाद क्या होगा और हम सिखाते हैं मरने से पहले क्या करना चाहिए। धर्म कहता है मुक्ति की बात मरने के बाद, हम करते हैं मुक्ति की बात जीते-जागते। दोनों में बड़ा अंतर है। लोग कहते हैं कि ''अगर आपकी बात हम मानेंगे तो हमको अपना धर्म छोड़ना पड़ेगा।'' क्यों? क्यों छोड़ना पड़ेगा? तुम भगवान में आस्था रखना चाहते हो, कोई बात नहीं। कोई किसी में आस्था रखना चाहता है, कोई बात नहीं। भई, जब स्वांस ये नहीं कहता है कि ''तू इस धर्म का है तो मैं तो नहीं आऊंगा तेरे अंदर!'' स्वांस तो किसी का धर्म नहीं देखता है तो फिर मनुष्य को किसी का धर्म क्यों देखना चाहिए? सब अपनी-अपनी आस्था रखते हैं। अपनी तरफ़ से, अपने तरीके से उस भगवान की पूजा करना चाहते हैं। यह सबका अधिकार है कि वे अपने तरीके से उस भगवान की, उस शक्ति की पूजा करें। यह किसी को अधिकार नहीं बनता है कि ''नहीं, यही ठीक है, यही ठीक है।'' मानवता की सबसे असली मांग यह है कि हम मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखें।

अगर कोई Politician (राजनीतिज्ञ) बन जाता है तो लोग कहते हैं कि यह Politician है। मैं देखता हूं कि यह मनुष्य है! किसी ने भगवा कपड़े पहन लिए, ''ये महात्मा है।'' पर यह मनुष्य

है। मैं अपने आपको क्या देखता हूं? आपने introduction (परिचय) में मेरी काफ़ी चर्चा सुनी। लोग मुझसे पूछते हैं कि ''क्या आप अपने आपको भगवान कहते हैं?'' मैं कहता हूं, ''कभी नहीं! भगवान मेरे अंदर ज़रूर है, जैसे तुम्हारे अंदर है। पर मैं भी मनुष्य हूं और तुम भी मनुष्य हो। और जब तक मनुष्य, मनुष्य का आदर करना नहीं सीखेगा, तब तक शांति, बाहर की शांति इस संसार के अंदर संभव नहीं है। और अगर मनुष्य, मनुष्य का आदर करना सीखना चाहता है तो सबसे पहले उसको अपना आदर करना पड़ेगा, अपने स्वांसों का आदर करना पड़ेगा, अपनी ज़िंदगी का आदर करना पड़ेगा। और जब वह उस आदर को करना शुरू करेगा तब वह दूसरे का भी आदर करेगा, और तभी वह संभव है।'' लोग कहते हैं, किसी ने हमसे कहा कि ''आप कैसे लायेंगे इस विश्व में शांति?'' तो उसको मैंने एक फुटबाल फ़ील्ड (मैदान) का, इसी तरह की जगह का उदाहरण दिया। मैंने कहा कि जैसा यह स्टेडियम है और तुम चाहते हो कि इसमें उजाला हो जाये, तो कैसे होगा उजाला? उसके लिए बल्ब जलाने पड़ेंगे, एक-एक बल्ब जलाना पड़ेगा। जब बल्ब जलेंगे तब उजाला होगा। तो हर एक मनुष्य एक-एक बल्ब है। यह स्टेडियम, यह पृथ्वी है। यह संसार है। अगर इसमें लाइट चाहते हो तो हर मनुष्य रूपी बल्ब को जलना पड़ेगा और जब वह प्रकाश अपने में से देगा, तब जा करके सारे स्टेडियम में प्रकाश ही प्रकाश उत्पन्न होगा। लोग बोलते हैं, ''यह तो असंभव बात है।'' चलो, हम मानते हैं, असंभव बात है — पर कोशिश तो कर लें! अगर हमारी कोशिशें सारी फ़ेल हो गयीं तो कम से कम पता तो लग जाएगा। क्योंकि साइंस में यही बात होती है कि 'पता तो लग जाएगा कि ये संभव नहीं है।' परंतु जब तक कोशिश ही नहीं की गयी, तब तक हम यह कैसे कह सकते हैं कि यह संभव ही नहीं है? कोशिश तो करनी चाहिए, और हम कोशिश कर रहे हैं। कठिनाइयों की कोई सीमा नहीं है। उनका सामना करना चाहिए।

लोग सब अपनी-अपनी बात करना चाहते हैं। लोग कहते हैं कि ''नहीं, ऐसा है, ऐसा है, ऐसा है!'' ठीक है। हम किसी से तर्क नहीं करना चाहते। तर्क का हमारा कोई मकसद नहीं है। हम तो सिर्फ एक बात रखते हैं कि तुम्हारे अंदर सब कुछ है। अगर आनंद रूपी चीज़ को अपनी shopping list (खरीदारी सूची) में डाल रहे हो, तो पैसा बर्बाद कर रहे हो। और कैसा पैसा? तुम्हारा स्वांस रूपी पैसा बर्बाद हो रहा है। इस लिस्ट में आनंद रूपी चीज़ के लिए कोई प्रबंध मत करो। उसका तो पहले ही प्रबंध हो रखा है, और वह प्रबंध है तुम्हारे अंदर! तुम्हारी ज़िंदगी के अंदर यह पहले ही प्रबंध हो रखा है।

कल का समय है। अगर आप लोग — आप लोगों में से कुछ, और जानना चाहते हैं तो स्वागत है। नहीं जानना चाहते हैं, तो आप आये, बैठे — इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद! मुझको यही आशा है कि आपने अपना टाइम बर्बाद नहीं किया। और अगर कभी फुर्सत हो और बैठे-बैठे स्वांस ले रहे हो, तो ज़रा सोचना कि ये जो स्वांस अंदर आ रहा है, जा रहा है — ''यह कितना मूल्यवान है!'' अपने जीवन को सफल बनाने की कोशिश करो। किसी भी रूप में, किसी भी तरह, जिस तरीके से संभव है, इस जीवन को सफल बनाओ।

सभी लोगों को मेरा बहुत-बहुत दुआ-आशीर्वाद! ❋

आनंद की खान

महाराज जी

छोटी-सी बात है, ज्यादा लम्बी-चौड़ी बात नहीं है, अनुभव की बात है और यही हम सब लोगों को समझना है कि इस जीवन में वह अनुभव होना बहुत ज़रूरी है। और सारी चीज़ों से — जैसे कहा गया है कि ''कमल की तरह, उस गंदे पानी में रहते हुए भी हम उससे उठ सकते हैं।'' तो ठीक बात है, कि आनंद की खान हमारे ही अंदर है। और यह ज़रूरी है कि हम अपने आपको जानें! अपने आपको जानें, क्योंकि आनंद की खान वहीं की वहीं है, और उसके बारे में हमें जानकारी नहीं है।

आज हम सब लोगों को यह अवसर प्राप्त है कि सुनें और समझने की कोशिश करें। क्योंकि सारी जिंदगी हम उन्हीं चीजों में लगाते हैं, और हमारी सारी जिंदगी उन्हीं चीजों में बीतती है कि ''मेरा घर हो, मेरा परिवार हो।'' और इन्हीं सारी चीजों में लग करके हमारा सारा जीवन बीतता है।

मैं आप लोगों को यह कहने के लिए नहीं आया हूं कि ऐसा नहीं होना चाहिए। यह तो सब अपनी-अपनी लोगों की मरज़ी है कि यह जो जीवन मिला हुआ है, इसको किस तरीके से बितायें। परंतु समझने की बात यह है कि इस जीवन में जो कुछ भी हमारे पास है, सबके होते हुए भी लोग 'दुख-दुख, दुख-दुख' चिल्लाते हैं। क्या यह जरूरी है कि यह जीवन जो हमको मिला है उसे हम इस तरीके से बितायें, कि जीवन में हमको दुख ही दुख मिले? क्या यह जरूरी है? क्या यह जरूरी है कि सारी जिंदगी भर हमें दुख ही दुख मिलता रहे, उन्हीं चिंताओं में हम पिसते रहें? उन्हीं चीजों में लगे रहें, जिससे कि हमको तनिक भी शांति नहीं मिले? तनिक भी कोई ऐसी चीज नहीं मिले जिससे कि इस जिंदगी के अंदर हमको चैन मिल जाये? क्या यह मनुष्य शरीर हमको सिर्फ दुख ही सहन करने के लिए मिला है? या यह भी संभव है कि इस शरीर के रहते हुए, इस जिंदगी के रहते हुए हमको उस परमानंद का अनुभव हो? यह समझने की बात है। वह परमानंद के सुख का जो अनुभव है, शांति का जो अनुभव है वह इस मनुष्य शरीर में ही संभव है। वह अभी मिल सकता है।

इसी बात को ले करके, इसी बात को समझाने के लिए हम जगह-जगह जाते हैं। यह ज्ञान, जिसकी हम चर्चा करते हैं, और आनंद,



जिसकी हम चर्चा करते हैं — यह वह आनंद है जो किसी भी देश की सीमाओं को नहीं देखता। यह नहीं देखता है कि क्या कल्चर (संस्कृति) है? यह नहीं देखता है कि क्या रंग है? यह नहीं देखता है कि किस धर्म का हम पालन करते हैं? यह सिर्फ मनुष्य तक आने की बात है। क्योंकि जैसे हमारा जन्म होता है, जैसे ही बच्चा मां की कोख से निकलता है, तो उस समय एक ऐसा समय होता है कि बच्चा पूरा नीला रहता है। नीला! अभी श्वास नहीं लिया — अभी बिल्कुल नीला रहता है बच्चा — वैसे तो हिल सकता है, हाथ भी हिलाता है, पैर भी हिलाता है, परंतु अभी कोई श्वास नहीं लिया और अभी नीला का नीला है। जब पहला श्वास आता है, तो यह जो अभी अपना रंग देख रहे हो, उस रंग का होने लगता है। गुलाबी रंग का होने लगता है। उस समय — जब से पहला श्वास लिया और यहां आये, दुख-सुख का अनुभव तो तभी से होता है। सर्दी रहे तो बच्चा हिलता है — अभी श्वास नहीं लिया है, परंतु फिर भी अगर उसको किसी चीज का दुख हो, तो वह रोने की कोशिश करेगा। समझने की बात यह है कि उस अवस्था में, उस समय में हम लोगों का क्या धर्म है? हम लोगों का क्या रंग है, क्या कल्चर है, क्या समझ है, जिस दिन से जिंदगी चालू होती है?

अभी सुबह-सुबह, जब मैं अपने कमरे में बैठा अखबार देख रहा था तो मैंने देखा कि किसी की मेमोरियल सर्विस हो रही थी, उसमें नाम लिखा हुआ था कि "ऐसे-ऐसे सज्जन हैं, जिनकी मृत्यु हो गयी और उनकी मेमोरियल सर्विस

(स्मृति में की गयी प्रार्थना) में आज यहां-यहां सेलीब्रेट हो रहा है।'' तो नीचे तो नाम लिखा था, फोटो भी थी, और उसके बाद दो तारीखें थीं। एक वह तारीख — जबकि उनका जन्म हुआ। और दूसरी तारीख थी — जब वह इस दुनिया से चले गये। उन दोनों तारीखों के बीच में एक छोटी सी लाइन '—' जिसे 'डैश' कहते हैं — वह था। समझने की बात यह है कि ''जो सारी जिंदगी है उसकी, वह उस डैश में है। सारी जिंदगी सिर्फ उसी डैश में पड़ी हुई है। आप लोगों की भी जिंदगी, हम लोगों की भी जिंदगी उसी डैश में आयेगी। सब लोगों की जिन्दगी उन्हीं डैश में, उसी लाइन में, उसी दो तारीखों के बीच की छोटी-सी लाइन में है।

समझने की बात यह है कि हम इन चीजों को भूल करके उन चीजों में लगते हैं, जिसमें सारी दुनिया लगी हुई है। यह सारी दुनिया — चाहे अमेरिका हो, चाहे ताइवान हो, चाहे आस्ट्रेलिया हो, चाहे अफ्रीका हो, चाहे कहीं भी हो, कोई भी देश हो, कोई भी कॉन्टिनैंट (महाद्वीप) हो, कोई भी जगह हो। सब उसी चक्कर में पड़े हुए हैं।

वैसे तो लोग सुबह-सुबह उठते हैं — तो वह सवेरा भी वैसे ही होना है, जैसे पिछले दिन हुआ था। और आगे का सवेरा भी वैसा ही होगा। सुबह-सुबह उठना है — नहाये-धोये, कपड़े पहने, और चले गये। यहां सबकुछ करते हुए भी, सब चीजों के बावजूद भी असली चीज़ को समझना है। आपको मैं एक उदाहरण देता हूं —

ऐथेन्स में सुकरात नामक एक दार्शनिक हुए, जिनको लोग बहुत मानते हैं। तो सुकरात ने क्या कहा? आज यूनीवर्सिटीज़ में पढ़ाया जाता है, बताया जाता है। सुकरात कैसा आदमी था, क्या करता था, कैसा, क्या उसकी फ़ॉलोविंग्स (अनुयायी लोग) थी? क्या-क्या उसकी जिंदगी के साथ हुआ? यह सब पढ़ाते हैं, और यह भी पढ़ाते हैं कि वह फ़िलासफ़र था। उसने लोगों को क्या कहा? तो उस समय का जो जमाना है — उस समय भी लोग अपनी नौकरी करने के लिए जाते रहे हैं। तो कोई सब्जी लेने के लिए जा रहा है, तो कोई किसी चीज के लिए जा रहे हैं, कोई किसी चीज के लिए जा रहे हैं — और उन सब चीजों के बीच में सुकरात वहां के नागरिकों की तरफ देख करके यही कहते हैं कि *''अपने आपको जानो!''* अपने आपको जानो! अपने आपको समझो!

आज चाहे हम किसी चीज में लगें, कुछ भी करें — कितने लोग हममें से हैं, जो थोड़ी-बहुत यह चेष्टा भी करते हैं कि हम अपने-आपको जानें। और सब चीज़ों को तो हम अच्छी तरीके से जानते हैं। और सब लोगों को बड़े अच्छे तरीके से जानते हैं, बड़े अच्छे तरीके से समझने की कोशिश भी करते हैं, परंतु क्या हम उसे जानने की कोशिश करते हैं जो यह अंदर की चीज है? जो स्वयं हम हैं — जिसके होते हुए हम सबकुछ हैं, और जो एक दिन चली जायेगी, जिसके बिना हम कुछ भी नहीं हैं?

यह एक जिंदगी मिली है। और यह हम लोगों का अवसर है कि हम सुनें और समझें। सोचने की बात यह है कि बनाने वाले ने कितनी बड़ी कृपा करके यह जीवन दिया है। अगर उसने फेफड़े बना दिये होते, नाक बना दी होती, और हवा न बनायी होती तो हम क्या करते? फेफड़े बना दिये होते, नाक बना दी होती और हवा

नहीं बनायी होती तो हम लोगों की क्या गति होती? वही गति होती जैसे बिना पानी के मछली तड़पती है। बनाने वाले ने हमको भी बनाया, आंखें भी बनायीं, आंखों से हम देख भी सकते हैं। और सचमुच में अंदर से सुंदरता भी दी। गुलाब का फूल देखते ही हम कहते हैं, ''गुलाब का फूल कितना सुंदर है!'' कभी यह भी विचारा कि सुंदरता गुलाब में नहीं है, सुंदरता हमारे अंदर है? जिस पकवान को खाने में आनंद आता है, वह आनंद उस खाने में नहीं बल्कि हमारे अंदर है? अगर जुकाम हो जाये, बीमार हो जाओ, नाक बंद हो, सूंघ नहीं सकते तो वही चीज़ अगर वापिस मिल जाये खाने के लिए तो नहीं खायी जायेगी। क्यों नहीं खायी जायेगी — अगर आनंद उसी में है? आनंद होना चाहिए — चाहे जब भी खायें? तो समझो कि आनंद कहां है? आनंद खाने में नहीं, हमारे अंदर है। तो जब कहा कि ''अपने आपको जानो!'' इसका मतलब हमलोग नहीं समझते हैं। सिर्फ इस बात को समझने की कोशिश करते हैं कि क्या बड़ी फ़िलासफी है!

लोग कहते हैं कि ''जी, इस समय तो यह चीजें संभव नहीं हैं।'' और मैं सच कहता हूं कि कौन ऐसा आदमी है, जिसको दुख पसंद हो? आनंद सब लोगों को पसंद है, सुख सब लोगों को पसंद है। दुख किसी को भी पसंद नहीं है। अगर बनाने वाले ने सिर्फ दुख ही दुख दिया होता, और कोई आनंद नहीं दिया होता तो यह वैसी ही बात होती, जैसे बिना पानी के मछली। फेफड़े भी हैं, नाक भी है, परंतु हवा नहीं है। सब दुख ही दुख। सब दुख ही दुख!

तो समझें कि जिस खजाने की खोज हम पता नहीं कहां-कहां करते हैं, जिस चीज की

आज भी अगर लोगों को अपने संशय दूर करने हैं, और इस जीवन में उस परमसुख और परमानंद की अनुभूति करनी है, तो उसी ज्ञान से होगी। वही ज्ञान जो अर्जुन को मिला। हम भी उसी ज्ञान की चर्चा आप लोगों से करने आये हैं। और मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मेरी बात मान करके आप लोग यह समझो कि यही ज्ञान अर्जुन को हुआ। नहीं! अपने आप अनुभव करके देखो। अनुभव की बात होनी चाहिए।

खोज, जिस आनंद की खोज हम पता नहीं कहां-कहां करते हैं, वह खजाना हमेशा ही हमारे अंदर रहा है। यह बोलने की बात नहीं है। अंतर सिर्फ इतना है कि जो हम बोल रहे हैं, जो हम सुना रहे हैं, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी मिल सकता है। यह कोई फ़िलासफ़ी की बात नहीं है कि आये और दस-पंद्रह मिनट, बीस मिनट, आधे घंटे सुनाया और चले गये। नहीं! यह प्रत्यक्ष चीज है। बिना अनुभव किये कुछ फायदा नहीं। क्योंकि फिर यह सारी बात खोखली रह जाती है। सारी बात — फिर सुनी और कही रह जाती है। हम वर्णन करते हैं सिर्फ उस चीज का, जिस चीज का हमने स्वयं अनुभव किया है। और कुछ नहीं। और हमको कोई बात नहीं करनी है। जो भी बात हम कहते हैं, और जिससे भी जो बात करते हैं, वह अपने अनुभव से करते हैं। जो हमारा अपना अनुभव है।

तो समझने की बात है, सोचने की बात है, विचारने की बात है कि जो मनुष्य शरीर मिला है, तो एक तरफ तो कहा है रामायण में कि —

बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद्ग्रंथनि गावा।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पाइ न जेहिं परलोक संवारा॥

अगर हमारा स्वयं का अपना अनुभव नहीं होता तो हम आपको यह रामायण का उदाहरण नहीं देते। परंतु हमारा अनुभव है कि सचमुच में यह जो मनुष्य शरीर मिला है, यह बड़े भाग्य से मिला है। यह जो मनुष्य शरीर है, यह उस आनंद, उस साधना, उस ज्ञान का दरवाजा है। कितने लोग इस बात को समझते हैं?

हमारे पास तो लोग गीता के बड़े-बड़े प्रश्न ले करके आते हैं। लोगों से हम कहते हैं, "भाई, तुम एक बात बताओ! जो तुम हमसे प्रश्न कर रहे हो, क्या गीता पढ़ने से पहले भी तुम्हारे यह प्रश्न थे या नहीं थे?" तो लोग कहते हैं, "जी, पहले तो नहीं थे।" मैंने कहा, "यह भी अजीब बात हो गयी। एक तरफ तो भगवान कृष्ण अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं, तो उसके संशय दूर कर रहे हैं। उससे तो गीता लिखी गयी, और उन संशय दूर करने वाली बातों को गीता में पढ़ करके तुम्हारे संशय और बढ़ रहे हैं — यह कैसे संभव है?" मैने कहा कि "तुम क्या समझते हो कि जितने भी प्रश्न इस संसार में थे, जो भी अर्जुन पूछ सकता था, क्या उसने सारे प्रश्न पूछे?" कहा, "नहीं।" तो मैंने कहा, "अगर उसने सारे प्रश्न नहीं पूछे, तो क्या चीज ऐसी हुई? क्या ऐसी बात हुई कि एक बात पर आकर वह रुक जाता है? वह भगवान कृष्ण से कहता है कि आपने मेरे संशयों को दूर कर दिया। आपने मेरे संशय को खतम कर दिया?" क्योंकि संशय तो हम सभी लोगों को है।

इस दुनिया में आकर लोगों के प्रश्न होते हैं कि "*जी, मैं इस संसार में क्यों आया? मेरा जन्म क्यों हुआ? मैं यहां क्या कर रहा हूं?*" पूछते हैं,

गुलाब का फूल देखते ही हम कहते हैं, "गुलाब का फूल कितना सुंदर है!" कभी यह भी विचारा कि सुंदरता गुलाब में नहीं है, सुंदरता हमारे अंदर है? जिस पकवान को खाने में आनंद आता है, वह आनंद उस खाने में नहीं बल्कि हमारे अंदर है?

मालूम नहीं है। तो भ्रम भी पैदा होता है तो क्यों होता है? किस अज्ञानता के कारण भ्रम पैदा होता है? आज सारे आधुनिक ज्ञान जो इस संसार में हैं, सबको पाने के बाद भी मनुष्य यह पूछता है कि "मैं यहां आया तो क्यों आया? मैं क्या कर रहा हूं? क्या करना है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है?" लोग पूछते हैं कि "*मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है?*" किस ज्ञान के अभाव में मनुष्य पूछ रहा है कि "मैं यहां क्या कर रहा हूं?" कोई अगर सुनाता है पिछले जन्म की बात — और पिछले जन्म की बात मुझसे लोग पूछने के लिए भी आते हैं, तो हम हाथ जोड़कर कहते हैं, "भैया, इस जन्म में तुमको मनुष्य शरीर मिल गया। क्या तुम्हें याद है कि पिछले जन्म में तुमने क्या किया? अगर याद है कि पिछले जन्म में क्या किया, तो वह इस जन्म में भी कर लो, अगला मिल जायेगा। क्या बात है?" तो लोग कहते हैं कि "याद तो नहीं है।" किसको याद है? किसको याद है कि क्या किया था पिछले जन्म में? और अगले जन्म की लोग मुझसे बात करने के लिए आते हैं कि "जी, अगले जन्म में क्या होगा? कहां जायेंगे?" तो हम कहते हैं, "भाई, अभी तो हम जीवित हैं। जब मर जायेंगे, और जहां जायेंगे, अगर वहां टेलीफोन होगा, तो तुमको फ़ोन करके बता देंगे कि क्या-क्या होगा बाद में?"

क्योंकि आज हम जीवित हैं। आज समय है, आज टाइम है। बड़ी दूर-दूर की बातें सोचते हैं। यहां की नहीं, बड़ी दूर-दूर की बातें सोचते हैं।

हाल ही में कांड हुआ। एक हवाई जहाज आउट ऑफ़ कंट्रोल (नियंत्रण के बाहर) हो गया, कंट्रोल में नहीं रहा, बल्कि गिरने लगा। हवाई जहाज आसमान से गिरने लगा। जब लोगों को यह पता चला, उन्होंने जब यह महसूस किया, कि अब बचना नहीं है, तो आप बताइये कि क्या वह समय बड़ी-बड़ी दूर की बातें सोचने का था? उस समय किसी ने यह नहीं पूछा कि "अगले जन्म में क्या होगा?" जो कुछ भी होना है, होना है। सिर्फ चन्द मिनटों की बात है। जो होना है, सो होना है। किसी ने फ़िलासफ़ी की बात नहीं समझी कि अब क्या होगा भाई? उस समय फ़िलासफ़ी जो होती है वह यह कि "आसमान से तारे टूट के धरती पर आ जाते हैं! सारे के सारे। क्योंकि आगे-पीछे कुछ नहीं चलता। उस समय तो बात सिर्फ वही चलती है, जो अनुभव की हो। तो भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि "अगर सारी जिंदगी भर पुत्र का भजन किया, तो आखिरी समय में भी वही बात याद आयेगी। अगर सारी जिंदगी भर परिवार का भजन किया, तो आखिरी समय में वही बात याद आयेगी। और अगर सारी जिंदगी भर मेरी याद करेगा, तो आखिरी समय में मैं ही याद आऊंगा।"

मैं आप लोगों से पूछता हूं, जिसका मुझे जवाब नहीं चाहिए — जवाब आपको खुद के लिए चाहिए, कि "क्या सचमुच में आप सारी जिंदगी भर उस परंब्रह्म का भजन करते हैं या नहीं?" मुझे इसका जवाब नहीं चाहिए। जवाब आपको चाहिए। क्योंकि आखिरी समय में बात वही याद आयेगी, कुछ भी कर लो, बात वही याद आयेगी। स्वयं अपने आपसे पूछो कि "क्या उस परम शक्ति का सिर्फ नाम सुना है, या उस परम शक्ति का अनुभव भी किया है?"

हमारे पास हर एक प्रकार के लोग आते हैं। हर प्रकार का आदमी आता है। वैसे लोग भी आते हैं, जो हिन्दू धर्म का पालन करने वाले हैं। ऐसे लोग भी आते हैं, जो ईसाई धर्म के पालन करने वाले हैं। ऐसे लोग भी आते हैं जो बौद्ध धर्म का पालन करने वाले हैं। और ऐसे लोग भी आते हैं, जो किसी भी धर्म को नहीं मानते हैं। हर एक तरह का आदमी, हर एक किस्म का आदमी आता है। अगर यह बात धर्मों की होती, तो यह आगे नहीं चल सकती थी। यह वह बात है, जो अनुभव की है। जब भगवान कृष्ण अर्जुन को समझा रहे थे, तो उस समय गीता का उदाहरण नहीं दे रहे हैं। उस समय तो गीता लिखी ही नहीं गई थी। उस समय गीता का उदाहरण भगवान कृष्ण ने थोड़े ही दिया था? अनुभव की बात की। जब अर्जुन को अनुभव हुआ, तब उसके सारे के सारे संशय दूर हुए।

आज भी अगर लोगों को अपने संशय दूर करने हैं, और इस जीवन में उस परमसुख और परमानंद की अनुभूति करनी है, तो उसी ज्ञान से होगी। वही ज्ञान जो अर्जुन को मिला। हम भी उसी ज्ञान की चर्चा आप लोगों से करने आये हैं। और मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मेरी बात मान करके आप लोग यह समझो कि यही ज्ञान अर्जुन को हुआ। नहीं! अपने आप अनुभव करके देखो। अनुभव की बात होनी चाहिए।

हम लोगों पर कितनी बड़ी कृपा हुई है कि यह मनुष्य शरीर मिला! कितनी कृपा हुई है कि जीवन का मौका मिला है। कितनी कृपा हुई है कि आज हम लोगों को इस ज्ञान को अनुभव करने

का भी मौका मिल रहा है। यह असीम कृपा की बात है। यह मनुष्य शरीर भी एक वरदान ही समझ लो। कितनी कृपा है कि यह मनुष्य शरीर हम लोगों को मिला! हम सचमुच इस तरफ भी सोचें कि परमानंद भी कोई चीज है! सुख-शांति भी कोई चीज है! जरा, उस तरफ को भी अपनी नज़र करें। क्योंकि हम हमेशा इस दुनिया के चक्कर में ही पड़े रहते हैं। थोड़ा हम यह भी देखें, यह भी समझने की कोशिश करें, कोई ऐसा काम करें कि हमारी ज़िंदगी में भी वह सुख-चैन और शांति आये। हम लोगों की जिंदगी में भी संतोष आये!

वह चीज क्या है? उसी चीज को कहते हैं — "सत्, चित् और आनंद!" जब वह सत्य इस चित् में रहता है, तो आनंद ही आनंद है। जब वह सत्य इस चित् में नहीं रहता है, तो सारी दुनिया में दुख ही दुख है। दुख ही दुख!

वह परमसत्य जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, वह बोलने की बात नहीं है। उसका हम विवरण नहीं कर सकते, वह हमेशा ही सच रहता है। परमसत्य, परमसत्य है। उस परमसत्य नाम की चीज को जानने के लिए, उसी चीज को समझने के लिए हम लोगों को — जहां तक मेरी समझ में आता है, हमको यह जीवन मिला है। यह सबसे हाईएस्ट पोटेंश्यल (उच्चतम शक्ति) है हमारी। सबसे हाईएस्ट पोटेंश्यल!

तो समझने की बात है कि जो सभी संत-महात्माओं द्वारा उस आनंद, उस अंदर की चीज के बारे में चर्चा की गयी है, हम लोग भी उस बात को समझने की कोशिश करें। छोटी-सी बात है, ज्यादा लम्बी-चौड़ी बात नहीं है, अनुभव की बात है और यही हम सब लोगों को समझना है कि इस जीवन में वह अनुभव होना बहुत जरूरी है। और सारी चीजों से — जैसे कहा गया है कि "कमल की तरह, उस गंदे पानी में रहते हुए भी हम उससे उठ सकते हैं।" तो ठीक बात है कि आनंद की खान हमारे ही अंदर है। और यह जरूरी है कि हम अपने आपको जानें! अपने आपको जानें, क्योंकि आनंद की खान वहीं की वहीं है, और उसके बारे में हमें जानकारी नहीं है।

तो समझो, विचार करो। विचार करो! अगर आप लोगों को ज्ञान चाहिए या उसके बारे में आप चाहते हैं कि आप आयें और पूछें, तो यह संभव है। आइये और पूछिये, जांच-बीच कीजिए। हम यह भी नहीं कहते कि "आंख बंद करके, कूद जाओ, कोई बात नहीं।" नहीं! हम तो यह कहते हैं कि "आओ, प्रश्न पूछो, जांच-बीच करो, और निश्चित करो कि तुमको यही ज्ञान चाहिए। और जब तुमको यह लगे कि हां, यह बात सही बात है और यही ज्ञान तुमको चाहिए, तो फिर यह ज्ञान मिल भी सकता है।

तो इसी बात को ले करके हमको भी सुनाने में आनंद आता है। अगर आप लोगों को भी आनंद आये तो वाह-वाह है। अभी तक तो सिर्फ सुनने की बात हुई है। सिर्फ उस बात की चर्चा करने में ही कितना आनंद है! तो यह समझो कि उसको स्वयं अनुभव करने में कितना आनंद होगा! और यही वह चीज है।

तो मैं आप सब लोगों को धन्यवाद देना चाहूंगा कि कितना सुंदर मौका रहा कि हम सब लोग एकत्रित हो सके, और इस ज्ञान की चर्चा कर सके, इस ज्ञान के बारे में कुछ समझ सकें। मैं आगे अब यही चाहूंगा कि इस जीवन का सब लोग ज्यादा से ज्यादा लाभ उठायें।

तो सभी लोगों को दुआ आशीर्वाद! *

कोशिश करो, जो तुम कर सकते हो!

महाराज जी

मुम्बई, महाराष्ट्र



ज्ञान का यही महत्व है। सत्संग का यही महत्व है। जीवन का यही महत्व है। और संभावना यह है कि तुम्हारे अंदर एक दीया है, घी भी है, और बत्ती भी है। सबकुछ है! ज्ञान रूपी माचिस की ज़रूरत थी। इसलिए मैं कहता हूं कि तुम लोग बहुत भाग्यशाली हो। माचिस ये रखी हुई है। और मैं इसलिए कहता हूं कि तुम भाग्यशाली हो, क्योंकि याद दिलाने वाला भी है। इसलिए अगर सचमुच में हम विचारें कि हमारे लिए सबकुछ उपलब्ध हो गया है, तो अब एक ही चीज़ की ज़रूरत है कि हम अपनी तरफ़ से इसमें मेहनत करें। हम अपनी तरफ़ से भजन का, अभ्यास का, सत्संग का, सेवा का पूरा-पूरा फ़ायदा उठायें।

हिन्दुस्तान में काफी जगह प्रोग्राम हो चुके हैं और हो रहे हैं। और आज के दिन यह प्रोग्राम मुम्बई में हो रहा है। कई साल हो गये मुम्बई आये हुए, परंतु एक खास चीज़ है — मैं एक उदाहरण कई प्रोग्रामों में देता आ रहा हूं। यह उदाहरण सबसे पहले जब मैं किसी सज्जन से बात कर रहा था तो उनको दिया था। एक शब्द है — 'संभावना!' अंग्रेजी में इसका अनुवाद होगा — Possibility. अगर मनुष्य को अपने से एक सवाल पूछना है, या उसको पूछना चाहिए, तो वह सवाल यह है कि "मेरे जीवन में क्या संभव है ?"

जहां तक दुनियादारी की बातें हैं — कोई अगर पढ़ा-लिखा है तो वह कह सकता है कि "यह संभव है।" किसी को अगर अच्छा खाना बनाना आता है, तो वह व्यक्ति कह सकता है कि "यह संभव है मेरी ज़िंदगी के अंदर!" किसी को अगर कारीगरी का शौक है, तो वह कह सकता है कि "यह संभव है मेरी ज़िंदगी के अंदर।" परंतु ऐसी कौन सी चीज़ है जो सचमुच सबके लिए संभव है ?

संभावना! क्या संभावना है ? अगर ज़रा गौर से देखा जाये तो मनुष्य के अंदर एक स्वांस आता है और एक स्वांस जाता है। और जिस तरह वह स्वांस आ रहा है और जा रहा है तो मनुष्य जीवित है। मैं एक बात और कहता हूं बीच में, कि हम, लोगों के ऊपर साइन (संकेत) लगाते हैं — "यह डाक्टर है, यह इंजीनियर है; यह वकील है, यह पायलट है; यह मेकैनिक है, यह ड्राइवर है," पर एक साइन हम नहीं लगाते हैं। और वह साइन है कि *"यह जीवित है!"* तो यह साइन, जो भी जीवित है, उसके ऊपर लगेगा — चाहे वह डाक्टर हो या न हो कि "यह जीवित है, यह जीवित है।" और, यह भी जीवित है, मैं भी जीवित हूं; यह भी जीवित है, मैं भी जीवित हूं!

आज आते समय मैंने देखा— ट्रैफ़िक सारे ही हिन्दुस्तान में खूब बढ़ रहा है। हर एक व्यक्ति जब एक दूसरे की तरफ देखता है, तो ख्याल यही आता है कि ये मोटर साइकिल वाला है, ये टैक्सी वाला है; ये बस वाला है, ये ट्रक वाला है। पर एक टाइटिल हम किसी के ऊपर नहीं लगाते हैं। और वह टाइटिल है — *"ये जीवित है।"* हम यह नहीं समझते कि यह कोई बड़ी बात है — जबतक कि हमारे साथ कोई ऐसा हादसा न हो जाये, जिससे कि हम मृत्यु और जीवन के बीच के दरवाज़े के बहुत ही क़रीब आ जायें। और तब कोई पूछे कि "यह जीवित है या मर गया ?" तब जाकर हम इस बात को ज़रूरी समझते हैं, महत्वपूर्ण समझते हैं। उससे पहले नहीं। उससे पहले तो हम अपने दुनियादारी के चक्कर में दौड़ रहे हैं। जो कुछ भी हमको सिखाया गया, जो कुछ भी हमको बताया गया, वह हम रटते रहे। किस प्रकार ? जैसे तोता रटता है — "राम, राम!" तोते को क्या मालूम कि राम कौन था ? तोते को क्या मालूम कि जहां राम का जन्म हुआ था, वहां किसी ने मंदिर को तोड़ कर मस्जिद बना दी ? उसको क्या मालूम ? और उसको क्या मालूम कि फिर उस मस्जिद को तोड़ करके अब मंदिर की बात है, कि बड़ा मंदिर बने और वो सारा कुछ legalized (वैध) हो ? तोते को क्या मालूम ? उसको तो सिर्फ सिखाया गया है, "रट — राम, राम, राम, राम!" और वह राम, राम रटता है। उसको क्या मालूम कि राम कब आये थे ? उनके साथ क्या हुआ ? वे क्या कह कर गये ? उनके साथ क्या बीती ? कुछ नहीं मालूम! रटता है — "राम, राम, राम, राम।" वैसे

कोशिश! यह तुम कर सकते हो। जब भी तुमको ज्ञान मिला — कई बार तो यह हो जाता है कि "ये होना चाहिए, ये होना चाहिए।" लेकिन होनी एक चीज़ चाहिए। और वह क्या चीज़ है? कि यह हृदय जो चाहता है, यह संभव हो। गुरु महाराज जी की तरफ़ ध्यान रहे। ज्ञान की तरफ़ ध्यान रहे। सेवा की तरफ़ ध्यान रहे, सत्संग की तरफ़ ध्यान रहे तो फिर वाह-वाह है! होना ये चाहिए! सारा प्रबंध है — ज्ञान है, तुम हो, जीवन है, स्वांस है और सत्संग है। सत्संग क्या है? यही कि गुरु महाराज जी आते हैं और कहते हैं, "भूलना मत!" फिर छूटे हुए हाथ को जुड़वा देते हैं, कि "भूलना मत!" और तब सब ठीक है। लोग कहते हैं कि "जी, सत्संग सुनते हैं तो पहले दिन, जिस दिन सत्संग सुना, सारी बातें साफ रहती हैं। फिर दूसरे दिन उठते हैं, फिर दुनियादारी के चक्कर में पड़ते हैं, और फिर भूल जाते हैं।" कोई बात नहीं। कोशिश करो!

ही मनुष्य ने भी रट लगा रखी है। जो भी दुनिया ने सिखाया, वह हमने सीखा, और वही हम बोलते हैं। जो दुनिया ने सिखाया, हमने कभी उस बात पर आजतक प्रश्न ही नहीं किया। दुनिया ने सिखाया — "भगवान वहां ऊपर है!" फ़ोटुवों को देखा, उनमें ऊपर की तरफ इशारा हो रहा है। तो हमने भी यही सोचा, "भगवान कहां है? भगवान वहां — ऊपर है!"

कहां ऊपर? ऊपर क्या है? यह जो यूनिवर्स है, यह जो विश्व है, इसमें भाई, न कहीं ऊपर है, न कहीं नीचे है! यह तो अथाह है दोनों तरफ़। और जो तुम ऊपर की तरफ उंगली करते हो, वह कभी ऊपर होती है, कभी नीचे होती है। परंतु हमने यह कभी अपने से प्रश्न पूछा ही नहीं, कि जिसके प्रति हमारी इतनी श्रद्धा है, जिसको हमारा हृदय जानना चाहता है, वह कहां है? कहां है वह? और जब तक यह ज़रूरी प्रश्न मनुष्य नहीं पूछेगा, तब तक उसमें और तोते में कोई अंतर नहीं है। जिस दिन तोता यह बोलेगा, "अजी, एक मिनट! राम कौन थे? तुमने मेरे को सिखाया, 'राम, राम, राम, राम' बोलना। मेरे को यह बताओ, राम था कौन?" तब तक हमारे में और तोते में कोई अंतर नहीं है।

तो मैं बात कर रह था संभावना की। और जो उदाहरण मैंने दिया, वह उदाहरण यह है कि दो व्यक्ति हैं। एक देख सकता है, उसकी आंखें बढ़िया हैं, उनसे सब कुछ काम करता है। और एक व्यक्ति जन्म से अंधा है, वह देख नहीं सकता। दोनों एक कमरे में हैं, सो रहे हैं, और कमरे में अंधेरा है। खिड़की बंद है, दरवाज़े बंद हैं, बहुत अंधेरा है। इतना अंधेरा है कि कमरे के अंदर कुछ दिखाई नहीं देता है। अर्थात्, जो सूरदास (अंधा) है, और जो देख सकता है, उनमें कोई अंतर नहीं है। अब, सवेरा हुआ। और बाहर एक आदमी दरवाज़ा खटखटाता है और कहता है कि "आज बहुत ही सुन्दर दिन है! धूप चमक रही है, आकाश साफ़ है, बहुत ही सुंदर नीला रंग है! चारों तरफ ओस हैं और हीरों के माफ़िक वह ओस चमक रही है। आज सुंदर-सुंदर फूल खिले हैं, शीतल हवा बह रही है। और उस हवा में सुंदर-सुंदर पेड़ों की टहनियां नाच रही हैं।" समझे मेरी बात? यह बात वह आदमी बाहर से कहता है। अब, यह

देखा जाये कि उन दोनों के अब क्या हाल हैं, जो कमरे के अंदर बंद हैं? सोचो! क्योंकि जो देख नहीं सकता है, वह तो सिर्फ़ एक ही चीज़ कह सकता है कि "भाई, और वर्णन कर! और मुझे बता कि तू क्या देख रहा है?" और जो देख सकता है, उसको वर्णन सुनने की ज़रूरत नहीं है। उसके लिए इतना ही पर्याप्त है कि उसने सुना कि आज बहुत ही सुंदर दिन है। और अगर वह उस चीज़ को देखना चाहता है, जिसका वह दूसरा आदमी वर्णन कर रहा है — उसने उस दृश्य का वर्णन सुना है — तो अब सिर्फ़ उसको उठने की ज़रूरत है, और दरवाज़ा खोलने की ज़रूरत है। इसे कहते हैं संभावना। इसे कहते हैं संभावना!

वह जो देख सकता है, उसके लिए एक संभावना है। जो देख नहीं सकता है, उसके लिए कोई संभावना नहीं है। वह तो एक ही लेविल पर, एक ही सीढ़ी पर टिका रहेगा। जो देख नहीं सकता है, वह सिर्फ वर्णन ही सुन सकता है। वह कल्पना कर सकता है, पर देख नहीं सकता। और जिसके पास आँखें हैं, वह कल्पना से परे जा सकता है। क्योंकि उसके लिए यह संभव है। जो चीज़ संभव हो, उसकी बनती है संभावना! क्योंकि उसकी आँखें हैं, वह देख सकता है; वह वर्णन से भी परे जा सकता है; वह कल्पना से भी परे जा सकता है; उसको पलंग पर बैठ करके कल्पना करने की ज़रूरत नहीं है — अगर वह संभावना को समझे!

जो जीता-जागता मनुष्य है, उसके जीवन में भी एक संभावना है। और जितनी भी चीज़ें हैं, इनसे अलग एक विशेष संभावना है। एक चीज़ है जो उसके जीवन में संभव है। और वह चीज़ किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं देखती। चाहे वह गरीब हो, चाहे वह अमीर हो; चाहे वह पढ़ा-लिखा हो, चाहे वह अनपढ़ हो; चाहे वह छोटा हो, चाहे वह मोटा हो; चाहे वह लम्बा हो, चाहे वह पतला हो; चाहे वह बूढ़ा हो, चाहे वह जवान हो। ये चीज़ें अपने में बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम लोग तो यह बात सुनते हैं कि यह चीज़ ये भेद-भाव नहीं करती है। ये नहीं देखती है कि कोई जवान है या बूढ़ा है, तो हम सोचते हैं, "ये तो अच्छी बात है!" पर क्यों अच्छी बात है? क्योंकि अगर तुम बूढ़े हो तो इसका मतलब है कोई penalty (जुरमाना) नहीं देनी पड़ेगी। और अगर तुम जवान हो, तो याद रखना, एक दिन तुम बूढ़े होगे। मतलब, प्रकृति ने यह नियम बना रखा है। प्रकृति ने तो इस कदर नियम बना रखा है कि कई चीज़ें हैं जो तब संभव होती हैं जब तुम जवान हो। जैसे-जैसे ये शरीर वृद्ध होता चला जाता है, कई चीज़ें हैं जो संभव नहीं रहती हैं। लोग ऊंचा सुनने लगते हैं। जब जवान थे, कहीं अगर छोटी सी ही सूई भी गिर गई तो उसकी आवाज़ आ जाती है। और जब वृद्ध हो जाते हैं तो कोई कान में चिल्लाए भी, तो कहेंगे — "हां, क्या कहा?" क्योंकि ठीक तरीके से सुनायी नहीं देता है। जब वृद्ध होते हैं तो आँखें काम नहीं करती हैं। जो शौक तुमको जवानी में लगा, जब तुम वृद्ध होगे, वह तब नहीं लगेगा। जिस प्रकार तुम सारी दुनिया को देखते हो — एक समय था, जब तुम ज्यादा तेज़ भाग रहे थे, और दुनिया कम तेज़ भाग रही थी। एक समय ऐसा आया कि तुम भी उसी रफ्तार से भाग रहे थे, जैसे दुनिया भाग रही थी। और एक समय आयेगा, जब तुम्हारी रफ्तार कम हो जायेगी। और ऐसा लगेगा कि दुनिया ज़्यादा तेज भाग रही है।

जिन लोगों के बेटे हैं — याद है तुमको? एक समय था कि तुम अपने बच्चों को समझाते

थे, "ये कैसे काम करता है, ये कैसे काम करता है, ये चीज कैसे काम करती है।" और आज अगर वे बड़े हो गये हैं तो आज वे तुमको समझाते हैं, "ये कैसे काम करती है, ये कैसे काम करती है। यह तुमको नहीं मालूम ?" समझ रहे हो न, मेरी बात ? तो इसका यह महत्व है कि जब भी तुम इस बात को समझो — जवान हो, वृद्ध हो, कोई बात नहीं, पर जब भी इस बात को समझने की कोशिश करोगे तो यह समझ में आयेगी। क्योंकि इसका समय से कोई ताल्लुक नहीं है। क्योंकि इसका समाज से कोई ताल्लुक नहीं है। जो छोटे लोग हैं, जो जवान हैं, उनको अगर मैं कम्प्यूटर चलाना सिखाऊं, तो वे तो बहुत जल्दी सीख जायेंगे। और अगर किसी ज़्यादा उम्र वाले को मैं कंप्यूटर चलाना समझाऊं, तो वह उसके लिए मुश्किल हो जायेगा। सीख लेते हैं लोग, पर फिर भी समझ में नहीं आता है। "क्या ? क्या ? ये क्या है ? ये क्या है ? ये क्या है ? क्या हुआ ? ये क्या कर रहे हैं ? क्या हो रहा है ?" और जो छोटे-छोटे बच्चे हैं, उनको तो एकदम समझ में आ जाता है। क्योंकि वे उन चीज़ों को दुनिया में देख रहे हैं। जहां देखते हैं — फ़िल्मों को देखते हैं, पोस्टरों को देखते हैं, बिल-बोर्ड्स को देखते हैं — वहां सारे कम्प्यूटर ही कम्प्यूटर, कम्प्यूटर ही कम्प्यूटर। और जो वृद्ध लोग हैं जब वे जवान थे, तब ऐसा माहौल नहीं था।

तो ऐसी चीज़ को पकड़ो, जिसका समय से कोई ताल्लुक नहीं है। इसका दूसरा मतलब यह हुआ कि तुम उसका आनंद ले सकोगे। क्योंकि जिंदगी में क्या हो रहा है ? शरीर को लेकर क्या हो रहा है ? चीज़ें कम होती चली जाती हैं। कम, कम, कम! और अगर इस चीज़ का समय से कोई ताल्लुक नहीं है तो इसका मतलब है कि जब तक तुम जीवित हो, इसका तुम पूरा-पूरा आनंद उठा सकोगे। तुमको यह चिंता करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी कि "जब मैं वृद्ध हो जाऊंगा तो यह काम आयेगी या नहीं आयेगी ?" कई लोग हैं जिन्होंने जवानी में गाड़ी ली, वह खूब चलाई। अब जैसे-जैसे शरीर वृद्ध हो गया है, वे नहीं चला पाते हैं। तो गाड़ी वहां रखी हुई है, और वह भी वहां हैं, पर नहीं चला पाते, और उसके बाद फिर उसे बेच देते हैं। समझ रहे हो न मेरी बात ? कई लोग हैं, जब जवान थे तो ऐसी-ऐसी घड़ी खरीदी, जिसमें छोटे-छोटे अक्षर थे। अब वृद्ध हो गये तो वह घड़ी भी

मैं एक बात कहता हूं कि जिन लोगों को यह ज्ञान है, वे सचमुच में बहुत भाग्यशाली हैं! जो तुमको करना है, तुम करो। हम नहीं कहते कि तुमको क्या करना चाहिए। हम सिर्फ़ यह कहते हैं कि अपने हृदय में उस ज्ञान के प्रति, गुरु महाराज जी के प्रति वह तार बनाये रखो। क्योंकि अगर गुरु महाराज के प्रति वह तार बना रहता है तो बार-बार उनकी आवाज़ सुनायी देती है। और कहां ले जाती है वह आवाज़? कि "अपने जीवन को सफल करना है।" जब कोई ऐसा हादसा बीतता है, जिससे मनुष्य दुखी हो गया, और अगर उस दुख के अंदर वह गुरु महाराज की याद करता है, तो गुरु महाराज के शब्द उसके पास आते हैं, जो उसने सुना हुआ है, कि "थोड़ी देर इंतज़ार करो, और ये सारा हादसा बदल जायेगा।" तो सब बदल जाता है। सब बदल जाता है!

रख दी। अब ऐसी पहननी पड़ती है, जिसमें थोड़े मोटे-मोटे अक्षर हों, ताकि कुछ दिखायी भी दे। परंतु जिस चीज़ का समय से कोई ताल्लुक नहीं है, उसका मज़ा तुम तबतक उठा सकोगे जबतक तुम्हारे अंदर ये स्वांस आ रहा है और जा रहा है।

आज बात हो रही है संभावना की! तो यह तुम्हारी जिंदगी के अंदर संभव है। तुम्हारे अंदर एक ऐसी चीज़ है, जो कभी वृद्ध नहीं होगी, कभी बूढ़ी नहीं होगी, कभी कम नहीं होगी। और वह जो चीज़ है तुम्हारे अंदर, वह उस चीज़ को पाना चाहती है जिसकी वही प्रकृति है, जो कभी कम न हो, जो कभी बूढ़ी न हो। वे दोनों आपस में मिलना चाहते हैं। तो वह कौन सी चीज़ है तुम्हारे अंदर? वह है तुम्हारा हृदय! तुम्हारा हृदय।

जब तुम एक साल के थे — यह भी मैं प्रोग्रामों में कह रहा हूं कि वह समय याद है जब तुम एक साल के थे? अगर आज तुम 20 साल के भी हो, 18 साल के भी हो, इसका मतलब है कि एक समय था जब तुम एक साल के थे। तो वह जो एक साल वाला है, वह कहां गया? मर गया? कहां गया वह? और वह दो साल वाला? वह कहां गया? और तीन साल वाला? वह कहां गया? और चार साल वाला? वह कहां गया? और पांच साल वाला, दस साल वाला? याद रखो, ये सब तुम्हारे में ही हैं! वह एक साल वाला भी मरा नहीं। वह भी तुम्हारे अंदर ही है। और दो साल वाला भी तुम्हारे अंदर ही है। और तीन साल वाला भी तुम्हारे ही अंदर है। और जो खोज एक साल वाले को थी, वह आज भी उस एक साल वाले की खोज है। क्योंकि मनुष्य जब अपनी प्यास को पहचानता है, तो ऐसा लगता है कि यह प्यास आज की नहीं है, पांच मिनट पहले की नहीं है। ऐसा लगता है कि यह प्यास तो सारी जिंदगी भर लगी हुई है। क्योंकि यह प्यास एक साल वाले को भी थी, दो साल वाले को भी थी, तीन साल वाले को भी थी, चार साल वाले को भी। और वे सब रो रहे हैं। सब रो रहे हैं! क्यों? प्यास लगी हुई है। सब रो रहे हैं! क्यों? भूख लगी हुई है। सब रो रहे हैं। क्यों? क्योंकि जो चाहिए, वह नहीं मिल रहा है। और सारी चीज़ें मिल रही हैं, पर जो चाहिए वह नहीं मिल रहा है।

मैं इसका क्या उदाहरण देता हूं? एक आदमी आता है और कहता है — "मुझे भूख लगी है।" मुझे याद है। बहुत समय पहले देहरादून में जहां हमारी कोठी थी — तो वहां लोग आते थे, दरवाज़ा खटखटाते थे — "भूख लगी है।" और हमारे यहां यह रिवाज था कि जो आयेगा, जो मांगेगा — खाना मांगेगा, पानी मांगेगा, उसको मना नहीं करते थे। तो, जब भी खाना बनता था — काफी लोग थे वहां उस समय, काफी खाना बनता था। थोड़ा बहुत खाना हमेशा बचा कर रखते थे, ताकि अगर कोई आ जाये तो उसको खाना दे दिया जाय, और देते थे — दो रोटी, दाल, जो कुछ भी उस दिन बना — भात, देते थे। तो अगर कोई व्यक्ति आये और खटखटाए कि "मुझे भूख लगी है" और उसको एक पेन दे दिया जाये। कोई आये और दरवाज़ा खटखटाए, उसको एक किताब दे दी जाये। कोई दरवाज़ा खटखटाए, तो उसको कपड़ा दे दिया जाये — समझ रहे हो न मेरी बात? परन्तु यह आदमी दरवाज़ा इसलिए खटखटा रहा है, क्योंकि वह भूख से व्याकुल है। कपड़े के लिए मांग नहीं है। मांग पेन की नहीं है, मांग कागज की नहीं है, मांग है खाने की। क्योंकि भूख लगी है। भूख लगी है! और सबकुछ दिया जा रहा है, पर खाना नहीं

मिल रहा है। प्यास लगी है, पानी की प्यास लगी है और क्या दिया जा रहा है? पेन दिया जा रहा है। घड़ी दी जा रही है। विचार करो, कोई अगर रेगिस्तान में प्यास के मारे मर रहा हो, उसको पेन से क्या मतलब है? अगर पेन उसको दे भी दिया जाये, तो वह पेन से 'पानी' लिखने की कोशिश करेगा। पानी! क्योंकि उसको पानी चाहिए। अगर कोई भूखा है, उसको अगर पेन दे दिया जाये तो वो क्या करेगा? क्योंकि उसको पेन की ज़रूरत नहीं है। वह सोचेगा कि तुम सुन नहीं सकते हो, इसलिए तुम चाहते हो कि लिख दिया जाये। तो वह 'खाना' लिखने की कोशिश करेगा। और फिर भी समझ में न आये, तो *यों* (इशारा) करेगा।



दो दिन पहले हमने देखा। मैं कार में बैठा हुआ था, एयरपोर्ट से मैं आ रहा था। एक आदमी सड़क के किनारे बैठा हुआ था। उसको मैं नहीं जानता, वह मुझको नहीं जानता। मुझे नहीं मालूम, वह कब पैदा हुआ। उसको नहीं मालूम, मैं कब पैदा हुआ। मुझे नहीं मालूम, वह कौन सी भाषा बोलता है, या बोलता था, या बोलता रहेगा। उसको नहीं मालूम कि मैं कौन सी भाषा बोल सकता हूं। परंतु वह बेचारा बैठा हुआ क्या कर रहा था? *'यों'* कर रहा था। तो मुझे नहीं मालूम, उसकी क्या हिस्टरी है। मुझे नहीं मालूम उसके साथ क्या बीती, वह कहां से आया, कब उसका जन्म हुआ। पर मुझको एक बात मालूम है कि उस समय जब वह बैठा हुआ था, तो वह भूखा था। उसने कोई बड़ा बिल-बोर्ड नहीं लगाया हुआ था। वह किसी पी. ए. सिस्टम या स्पीकर को लेकर नहीं कह रहा था कि "मैं भूखा हूं, मैं भूखा हूं।" वह उस भाषा में व्यक्त कर रहा था कि "मैं भूखा हूं," जो सबको समझ में आती है — पढ़ा-लिखा हो, या न हो। ये चीज़ें ही ऐसी हैं! और जो हृदय की प्यास है, वह भी ऐसी है।

तो इस संभावना को पूरा करने के लिए किस चीज़ की ज़रूरत है? कोई कहता है किसी चीज़ की ज़रूरत है; कोई कहता है किसी चीज़ की ज़रूरत है। मैं कहता हूं कि इस संभावना को पूरा करने के लिए समय के महापुरुष की ज़रूरत है। क्योंकि हमको नहीं मालूम! मैं इस बात को स्पष्ट करता हूं। हमारा ध्यान कहां है? एक उदाहरण आता है। मेले में बाप और बेटा जा रहे हैं। मेले में भीड़ है, तरह-तरह के गुब्बारे लगे हुए हैं। तरह-तरह के खिलौने हैं, तरह-तरह की चीज़ें हैं। और बाप अपने बच्चे से क्या कहता है? "मेरे साथ

रहना। मेरी उंगली पकड़ के रहना। छोड़ना मत!" और बच्चा अपने बाप की उंगली और ज़ोर से पकड़ता है। और उसका ध्यान जाता है — गुब्बारों की तरफ, खिलौने की तरफ! और जैसे-जैसे ध्यान उस तरफ जाता है, तो क्या चीज़ गलत हो रही है? बच्चे को अहसास नहीं है कि कोई चीज़ गलत हो रही है, पर हो रही है। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे उसकी जो मुट्ठी है, वह ढीली हो रही है। क्योंकि जबतक उसका ध्यान एकाग्र था, तबतक इस उंगली को खूब दबा के पकड़ना है, यह बात उस बच्चे के लिए स्पष्ट थी, पर अब ध्यान बँट गया है। अब ध्यान उस चीज़ पर नहीं रहा। अब ध्यान उन गुब्बारों की तरफ, उन खिलौनों की तरफ चला गया है। और धीरे-धीरे, धीरे-धीरे यह मुट्ठी खुलने लगी। एकदम नहीं, एक पल में नहीं। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे। और इतना धीरे कि उसे अहसास भी नहीं हो रहा है कि धीरे-धीरे यह मुट्ठी इतनी खुल गयी है, कि हाथ भी नीचे आ गया है। तुम कभी भी उस बच्चे के पास जाकर पूछ सकते हो, "क्या तू अपने आप को खोना चाहता है? इस मेले में अपने को खोना चाहता है?" "नहीं!" "तू अपने मां-बाप के पास रहना चाहता है?" "हाँ!" परंतु उसके लिए जिस ध्यान की ज़रूरत है, अगर वह ध्यान एकाग्र नहीं कर सकेगा तो ध्यान उसका बँटेगा। और ध्यान जब बँटेगा, तो वही होगा जो नहीं होना चाहिए। ऐसा क्यों है?

जब आप अपने घर में खाना पकाना चाहते हैं, तो खाना पकाते समय सभी लोग एक चीज़ का ध्यान रखते हैं कि अगर कड़ाही में या आग के ऊपर खाना बन रहा है, तो वह "जल न जाये।" वैसे तो नमक का ध्यान होता है, मिर्च का ध्यान होता है, किसी अन्य चीज़ का भी — परंतु एक चीज़ का हमेशा ध्यान रहता है कि वह जल न जाये। और आपको अच्छे तरीके से मालूम है कि जैसे ही आपका ध्यान वहां से बँटता है, तो क्या होता है? वह जलता है! कोशिश तो थी कि न जले, पर जलेगा! कार चलाने वाले, जिनको कार चलानी आती है, उनको अच्छे तरीके से मालूम है कि ध्यान देना है। ध्यान नहीं देंगे, तो ऐक्सीडेंट होगा। और जैसे ही ध्यान इधर से उधर गया, तो क्या होता है? ऐक्सीडेंट होता है। अगर ध्यान नहीं है तो वही — जिसकी चिंता है, वही होता है।

तो इसके तो मैं कितने ही उदाहरण दे सकता हूं। पर बात उदाहरणों की नहीं है। बात यह है कि हमको यह समझ में आये कि हमको इस जिंदगी के अंदर ध्यान देने की कितनी ज़रूरत है! क्योंकि ट्राफ़िक बहुत हो गया है। है न बहुत? कोई इधर से निकलने की कोशिश कर रहा है, कोई उधर से निकलने की कोशिश कर रहा है। कोई कहीं जा रहा है, कोई कहीं जा रहा है, कोई कहीं जा रहा है। वहां जाने वाला इधर से आ रहा है। *ऐसे* कर रहा है, *वैसे* कर रहा है। कोई किधर से आ रहा है, कोई किधर से आ रहा है। कोई कुछ कर रहा है, कोई कुछ कर रहा है। ध्यान! क्योंकि तुमको लुभाने के लिए सब कोशिश कर रहे हैं — "इधर ध्यान दो! इधर ध्यान दो! इधर ध्यान दो!"

देखो, तुम सड़कों पर जाओ तो तुमको बड़े-बड़े बिल-बोर्ड (संकेतक) दिखायी देंगे। ये बिल-बोर्ड किसके लिए हैं? कौन देखेगा इन बिल-बोर्डों को? जो गाड़ी में बैठा हुआ है, वही तो देखेगा? अब तुम सोचो कि उसको बिल-बोर्ड देखने चाहिए या अपनी गाड़ी? ट्रैफ़िक कहां है, ये देखना चाहिए? पर उसी के लिए तो लगाये हुए हैं? वही देखेगा। तो मोहने के लिए, माया जिसे कहते हैं, वह सब

ओर है। ''*कबहूं मन रंग तुरंग चढ़े।*'' यह भजन तो बहुत साल पहले ही लिखा गया था। वहां तो सिर्फ़ घोड़े की बात हो रही है — ''अजी, यह मन घोड़े की सवारी करता है।'' अगर आज भजन लिखा जाये तो कैसा होगा? घोड़े की बात अगर हो गई तो कम से कम यह तो लगेगा कि लोग नेचर (प्रकृति) की तरफ़ जा रहे हैं। घोड़े पर सवारी करना चाहते हैं। पर यहां तो ''मन कभी कहीं जा रहा है, कभी कहीं जा रहा है; कभी कहीं जा रहा है, कभी कहीं जा रहा है।'' याद है, जब सेलफ़ोन नहीं था तो कितनी शांति थी? और अब मैं देखता हूं — मेरे पास भी है सेलफ़ोन, पर मैं जैसे ही कॉल खत्म की, उसको बंद कर देता हूं। उसको चालू नहीं रखता। क्योंकि वह सेलफ़ोन one-way (एक ओर) के लिए है — मैं जिससे बात करना चाहूं। पर मेरे से बात करने के लिए नहीं है! तो मैं जब लोगों के साथ खड़ा रहता हूं, या बात करता हूं, तो कभी किसी का कॉल जा रहा है, कभी किसी का जा रहा है, कभी किसी का जा रहा है।

तो दुनिया ने क्या कहा? दुनिया ने कहा कि ''यह हो जायेगा, तो कितनी सहूलियत हो जायेगी!'' हो गई सहूलियत? अब तो कोई चैन ही नहीं लेने देता है। पहले तो कम से कम यह था कि घर को छोड़ा तो फ़ोन भी वहीं रह गया। अब जहां हो — गुसलखाने में हो, या कहीं हो — अब तो कोई चीज़ तुम आराम से कर ही नहीं सकते हो! और लोग हैं, फ़ोन से उनका ऐसा नाता जुड़ा हुआ है — मैं सच कहता हूं कि आज जिस कलियुग का उदाहरण है, ये पहले नहीं दिया जा सकता था — ''जैसा ध्यान तुम्हारा सेलफ़ोन के ऊपर लगा रहता है, अगर ऐसा ही भगवान के ऊपर लगे तो तुम्हारा कल्याण हो जाये!'' क्योंकि जहां उसने किया, 'भर्रर', जहां उसने किया, 'पें', जहां उसने किया, 'बीट्' — मतलब, लोग हैं मेरे से बात कर रहे हैं और मैं उनसे बात कर रहा हूं — ''एक मिनट!'' क्या? ''रांग नम्बर।'' क्या ज़माना आ गया! तो मन को भगाने के लिए सारे प्रबंध किये हुए हैं। और हर दिन प्रबंध होते हैं, और होते रहते हैं। और मनुष्य है कि इस बात को छोड़ देता है कि मेरा ध्यान कहां होना चाहिए। क्या हम इस दुनिया को बदल सकेंगे और सेलफ़ोनों को खत्म कर सकेंगे? नहीं!

यह तो मनुष्य की प्रकृति है। ऐसी चीज़ें तो होती रहेंगी, परंतु ध्यान हमारा न बँटे, वह वहीं का

बात यह है कि हमको यह समझ में आये कि हमको इस जिंदगी के अंदर ध्यान देने की कितनी ज़रूरत है! तो मन को भगाने के लिए सारे प्रबंध किये हुए हैं। और हर दिन प्रबंध होते हैं, और होते रहते हैं। और मनुष्य है कि इस बात को छोड़ देता है कि मेरा ध्यान कहां होना चाहिए। यह तो मनुष्य की प्रकृति है। परंतु ध्यान हमारा न बँटे, वह वहीं का वहीं बना रहे — यह हम कर सकते हैं। क्योंकि अगर यह लग गया, इस जीवन की संभावना समझ में आ गई, तो फिर मार्ग अपने आप खुल गया! तो ध्यान तुम्हारा कहां रहना चाहिए? कि मैं अपने इस जीवन की संभावना को संभव करूं, इसको पूरा करूं।

वहीं बना रहे — यह हम कर सकते हैं। क्योंकि अगर यह लग गया, यह बात समझ में आ गई, इस जीवन की संभावना समझ में आ गई, तो फिर मार्ग अपने आप खुल गया! क्योंकि जब संभावना ही समझ में नहीं आई, तो बैठे रहते हैं लोग। कोई कुछ सुनाता है, कोई कुछ सुनाता है; कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है। और लोग सुनते रहते हैं, सुनते रहते हैं!

अब लोग महाभारत की चर्चा करते हैं। महाभारत तो कभी होता ही नहीं, अगर सेलफ़ोन होते, और न कभी गीता ही होती। अर्जुन बार-बार — ''एक मिनट भगवान, एक मिनट!'' कहता रहता। परंतु, खैर महाभारत हुई, अर्जुन ने प्रश्न पूछे। भगवान कृष्ण ने उनका जवाब दिया। जब ध्यान सही जगह रहता है तो सारी चीज़ें जहां होनी चाहिए, वहां जाती हैं। और जब मनुष्य का ध्यान इधर से उधर हो जाता है तो कोई भी चीज़ उसके सामने आये......।

आज देखो, वही अर्जुन भगवान कृष्ण से कहता है — और यह बात मुझे बहुत ही पसंद है, कि ''मैं आप से माफ़ी मांगता हूं। मुझे पता नहीं था कि आप कौन हैं! मुझे माफ़ करो, मैंने आपको सखा कहा, मैंने आपको बंधु कहा। न जाने मैंने आपको क्या-क्या कहा! मुझको यह कोई ख्याल नहीं था कि आप कौन हैं।'' सारे उसके संशय खत्म हो गये। और आज उसी गीता को पढ़कर के लोगों के दसों-दस और प्रश्न हो रहे हैं, जो अर्जुन ने भी नहीं सोचे थे! तो ध्यान तुम्हारा वहां रहना चाहिए। कहां रहना चाहिए? कि मैं अपने इस जीवन की संभावना को संभव करूं, इसको पूरा करूं।

मैं एक बात कहता हूं कि जिन लोगों को यह ज्ञान है, वे सचमुच में बहुत भाग्यशाली हैं! जो तुमको करना है, तुम करो। हम नहीं कहते कि तुमको क्या करना चाहिए। हम सिर्फ़ यह कहते हैं कि अपने हृदय में उस ज्ञान के प्रति, गुरु महाराज जी के प्रति वह तार बनाये रखो। क्योंकि अगर गुरु महाराज के प्रति वह तार बना रहता है तो बार-बार उनकी आवाज़ सुनायी देती है। और कहां ले जाती है वह आवाज़? कि ''अपने जीवन को सफल करना है।'' जब कोई ऐसा हादसा बीतता है, जिससे मनुष्य दुखी हो गया, और अगर उस दुख के अंदर वह गुरु महाराज की याद करता है, तो गुरु महाराज के शब्द उसके पास आते हैं, जो उसने सुना हुआ है, कि ''थोड़ी देर इंतज़ार करो, और ये सारा हादसा बदल जायेगा।'' तो सब बदल जाता है। सब बदल जाता है!

एक आदमी था — यह भी काफ़ी-काफ़ी साल पहले की बात है। उसकी बीवी मर गयी। और वह सब (क्रिया-कर्म) करा-करू करके वापिस जा रहा था। तो वह गाड़ी में था — मैं खड़ा हुआ था, क्योंकि मैं तो वापिस जाने वाला था। तो उसने इशारा किया कि आप भी आकर बैठ जाओ मेरे साथ। तो मैं भी उसके साथ बैठ गया। वह ऐसा रो रहा था बेचारा! अब तो उसका भी शरीर पूरा हो गया। मैंने उसकी पीठ पर हाथ ठोक कर कहा, ''चिंता मत कर भाई, ये सब ठीक हो जायेगा।'' तो उसने मेरी तरफ देखा, कहा, ''सचमुच में?'' मैंने कहा, ''हां, सचमुच में सब ठीक हो जायेगा।'' दो महीने के बाद वह फिर मुझसे मिलने के लिए आया — नयी कार और नयी गर्ल-फ्रैंड! (हँसी)

जो चीज़ संभव हो, उसकी बनती है संभावना! जो जीता-जागता मनुष्य है, उसके जीवन में भी एक संभावना है। और जितनी भी चीज़ें हैं, इनसे अलग एक विशेष संभावना है। एक चीज़ है जो उसके जीवन में संभव है। और वह चीज़ किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं देखती। तो इस संभावना को पूरा करने के लिए किस चीज़ की ज़रूरत है? कोई कहता है किसी चीज़ की ज़रूरत है; कोई कहता है किसी चीज़ की ज़रूरत है। मैं कहता हूं कि इस संभावना को पूरा करने के लिए समय के महापुरुष की ज़रूरत है। क्योंकि हमको नहीं मालूम!

नयी! और मेरे को एकांत में ले जा करके कहता है, ''आपने ठीक कहा था कि सबकुछ ठीक हो जायेगा।'' मुझे आज भी याद है वह बात। क्योंकि ये तो संसार की रीत है। सबकुछ बदलता रहता है।

कोई ऐसी चीज़ नहीं है इस संसार के अंदर, जिसके ऊपर तुम हाथ रख कर कह सको कि यह नहीं बदलेगी। ऐसी कोई चीज़ नहीं है! इसलिए, अगर ऐसी चीज़ की तुमको ज़रूरत है तो वह तुम्हारे अंदर है। ध्यान अगर अंदर रहे, फिर कोई बात नहीं। फिर कोई बात नहीं! जहां जाना है, जाओ। जैसा होना है, होगा। और यह वैसी ही बात है कि जो लोगों को आग से बचाने के लिए जाते हैं — फ़ायर ब्रिगेड वाले, तो वे कई बार अपने को पानी से भिगो लेते हैं। क्यों भिगो लेते हैं पानी से? क्योंकि पानी से जब वे भीग जाते हैं तो उन पर आग का असर कम हो जाता है। खत्म नहीं, कम हो जाता है! और अंतर है खत्म होने में और कम होने में।

अंधेरा है, गुरु महाराज जी ज्ञान का दीया देते हैं। ज्ञान के दीये को जलाओ! ज्ञान का दीया क्या करेगा? अंधेरा तो फिर भी रहेगा, पर जहां दीया है, जहां तुम हो, वहां नहीं रहेगा। और अगर दीया बुझ गया तो फिर अंधेरा हो जायेगा। फिर दीया जलाओ, फिर उजाला हो जायेगा। और उजाला उधर हो या उधर हो, या उधर हो — उससे क्या मतलब? जहां तुम हो वहां होना चाहिए, उससे मतलब है। क्योंकि अगर 10 मील उधर लाइट जल रही है तो फिर क्या फ़ायदा? अंधेरा तो यहां है न? यहां का अंधेरा खत्म होना चाहिए। हर एक व्यक्ति की जिंदगी के अंदर उजाला होना चाहिए — हर एक व्यक्ति के! यह नहीं है कि तुम बगल में एक दीया जला सकते हो। ना! *तुम्हारा* दीया जलना चाहिए। *तुम्हारी* ज़िंदगी के अंदर अंधेरा न हो, उजाला हो!

ज्ञान का यही महत्व है। सत्संग का यही महत्व है। जीवन का यही महत्व है। और संभावना यह है कि तुम्हारे अंदर एक दीया है, घी भी है, और बत्ती भी है। सबकुछ है! ज्ञान रूपी माचिस की ज़रूरत थी। इसलिए मैं कहता हूं कि तुम लोग बहुत भाग्यशाली हो। माचिस ये रखी हुई है। और मैं इसलिए कहता हूं कि तुम भाग्यशाली हो, क्योंकि याद दिलाने वाला भी है। यह तो वैसी ही बात हो गई कि इधर है पिता की उंगली, इधर है बच्चा, और पीछे कोई आ रहा है। और जैसे ही यह हो कि हाथ उससे छूटे तो वह उठा करके फिर जोड़ दे। याद दिलाता रहे कि भूलना मत! भूलना मत, भूलना मत! बस यह बात! तो इसलिए अगर सचमुच में हम विचारें कि हमारे लिए सबकुछ उपलब्ध हो गया

है, तो अब एक ही चीज़ की ज़रूरत है कि हम अपनी तरफ़ से इसमें मेहनत करें। हम अपनी तरफ़ से भजन का, अभ्यास का, सत्संग का, सेवा का पूरा-पूरा फ़ायदा उठायें।

देखो, क्योंकि ये प्रोग्राम उन लोगों के लिए है जिन लोगों को ज्ञान है, तो मैं एक बात कहूंगा। लोग अभ्यास से बहुत संकोच करते हैं। तुम कोशिश करो! देखो, तुम सबकुछ नहीं कर सकते हो, परंतु एक चीज़ कर सकते हो, और वह है — कोशिश! तुम कोशिश करो। और उसका फल तुमको ज़रूर मिलेगा। तुम कोशिश करो। लोग कहते हैं, ''जी, टाइम नहीं है।'' तुम कोशिश करो। तुम कोशिश करो!

मैं एक उदाहरण देता हूं पानी और पत्थर का। तो मज़बूत कौन सी चीज़ है? पानी या पत्थर? वैसे तो सब लोगों को मालूम है कि पत्थर बहुत मज़बूत है। अगर तुम एक पत्थर को पानी के अंदर फेंको तो पत्थर पानी को हटा देगा। परंतु कोशिश एक ऐसी चीज़ होती है — कोशिश करते रहो, कोशिश करते रहो। यही पानी करता है। जब पानी बहने लगता है तो पत्थर कहता है, ''मैं नहीं हिलूंगा!'' पानी कहता है, ''कोई बात नहीं है।'' और पानी कोशिश करता रहता है, कोशिश करता रहता है, कोशिश करता रहता है, तो वह पत्थर भी क्या बन जाता है? रेत बन जाता है! बड़े-बड़े पहाड़ों को पानी हटा देगा, इधर से उधर कर देगा। क्योंकि वह है और उसकी कोशिश है — कोशिश, कोशिश, कोशिश, कोशिश! यह तुम कर सकते हो। जब भी तुमको ज्ञान मिला — कई बार तो यह हो जाता है कि ''ये होना चाहिए, ये होना चाहिए; ये होना चाहिए, ये होना चाहिए।'' लेकिन होनी एक चीज़ चाहिए। और वह क्या चीज़ है? कि यह ह्रदय जो चाहता है, यह संभव हो। गुरु महाराज जी की तरफ़ ध्यान रहे। ज्ञान की तरफ़ ध्यान रहे। सेवा की तरफ़ ध्यान रहे, सत्संग की तरफ़ ध्यान रहे तो फिर वाह-वाह है! होना ये चाहिए। होना ये चाहिए!

कई लोग हैं, जो आपस में भेद पैदा करते हैं। कोई कहता है, ''अजी, वह ऑर्गनाइज़र अच्छा नहीं है।'' कोई कहता है, ''वो अच्छा नहीं है।'' कोई कहता है, ''वह ठीक नहीं है।'' कोई कहता है, ''वह ठीक नहीं है।'' अरे, इसमें ठीक है या नहीं है, इससे क्या लेना-देना है तुमको? क्या लेना-देना है? जिसको चटनी पीसनी है, उसके लिए सिल-बट्टा अच्छा होना चाहिए। है न? उसके लिए सिल-बट्टा अच्छा होना चाहिए। खिड़की बड़ी हो या छोटी हो, उससे उसको क्या मतलब? बनानी तो उसको चटनी है, तो तुम क्या चाहते हो अपनी जिंदगी के अंदर? तुम अगर वह शांति चाहते हो, तो उधर काहे के लिए ध्यान देते हो? इधर ध्यान दो। इधर ध्यान दो! शांति हथेली पर नहीं आयेगी। शांति अंदर आयेगी। और जब अंदर आयेगी तो हथेली भी उसका मज़ा लेगी। पर हथेली में रखने की कोशिश करोगे, तो न तो हथेली में आयेगी, न अंदर आयेगी। तो कहां चीज़ को फ़िट होना चाहिए, ये बहुत ज़रूरी बात है। समझे न? ये बहुत ही ज़रूरी बात है।

इसलिए सारा प्रबंध है — ज्ञान है, तुम हो, जीवन है, स्वांस है और सत्संग है। सत्संग क्या है? यही कि गुरु महाराज जी आते हैं और कहते हैं, ''भूलना मत!'' फिर छूटे हुए हाथ को जुड़वा देते हैं, कि ''भूलना मत!'' और तब सब ठीक है। लोग कहते हैं कि ''जी,

सत्संग सुनते हैं तो पहले दिन, जिस दिन सत्संग सुना, सारी बातें साफ रहती हैं। फिर दूसरे दिन उठते हैं, फिर दुनियादारी के चक्कर में पड़ते हैं, और फिर भूल जाते हैं।'' कोई बात नहीं। कोशिश करो! जिस दिन तुमको उस दिन से इतना प्रेम हो जायेगा — किस दिन से? जिस दिन तुमने सत्संग सुना था और सबकुछ साफ था — अगर उस दिन से प्रेम हो जायेगा तो फिर तो उसी चीज़ की कोशिश करोगे कि वही clarity (स्पष्टता), वही साफपन इस ज़िंदगी भर में बना रहे। क्योंकि प्रेम की बात है। कुछ चीज़ें हैं, जो डाँट करके की जा सकती हैं, और कुछ चीज़ें हैं जो सिर्फ प्रेमवश ही होती हैं। इसलिए तुम प्रेम करो! इस स्वांस से प्रेम करो, तुम इस ज्ञान से प्रेम करो और अपने जीवन को सफल बनगाओ।

सभी लोगों को मेरा बहुत-बहुत दुआ-आशीर्वाद!

❖

(पृष्ठ 2 का शेष भाग)

और सभी को ज्ञान के संसार में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करेंगे।

इतना ही नहीं, मार्च के महीने में महाराज जी ने काफी अरसे से प्रतीक्षा-रत भारी संख्या में जिज्ञासुओं को ज्ञान का उपहार प्रदान करने हेतु दिल्ली, बड़ौदा और नेपाल में अनेक ज्ञान-सत्रों का आयोजन कराया। दिल्ली में 8 ज्ञान-सत्रों के अंतर्गत लगभग 21,000 से अधिक लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया। बड़ौदा में 3 ज्ञान-सत्रों में ज्ञान प्राप्त करने वाले जिज्ञासुओं की संख्या लगभग तीन हजार थी, तथा नेपाल में आयोजित 4 ज्ञान-सत्रों के अंतर्गत लगभग 3,500 जिज्ञासुओं ने ज्ञान की निधि प्राप्त करके अपने जीवन को धन्य किया। इतने बड़े तत्व-जिज्ञासुओं के समुदाय को ज्ञान की बारीकियों से परिचय कराया जाना सिर्फ़ समय के महापुरुष द्वारा ही संभव था। इसके लिए संसार का इतिहास प्रमाण है कि आज तक ऐसा नहीं हुआ कि इतने बड़े पैमाने पर, इतने अल्प समय में इतनी बड़ी संख्या में किसी भी संत-महापुरुष ने इतने अधिक कार्यक्रमों के आयोजन और निष्पादन में इस प्रकार सक्रिय भूमिका निभायी हो, जितनी कि महाराज जी ने व्यक्तिगत रूप से निभाई, और उनके मार्गदर्शन में लोगों के जीवन में जितनी नव-चेतना का संचार हुआ और हृदय में अंतर्निहित सुख-शांति और आनंद की प्राप्ति हुई, वह अभूतपूर्व थी।

इस वर्तमान अंक में हम महाराज जी द्वारा जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम और इससे पहले मुम्बई में किये गये प्रवचनों को प्रकाशित कर रहे हैं। उनके विषय में कुछ लिखने के बजाय बेहतर यह होगा कि हमारे प्रबुद्ध पाठकगण इनके प्रत्येक वाक्य का खुद लुत्फ़ उठायें और अपना जीवन सार्थक करें। इसके अतिरिक्त इसी अंक में महाराज जी द्वारा एक अन्य जिज्ञासु कार्यक्रम में किये गये संबोधन को भी शामिल कर रहे हैं। हमारा अनुरोध है कि इसका विशेष रूप से अध्ययन करके इस पर मनन करें। लिखित सामग्री में यही तो विशेषता है कि जब भी मौका मिले, महाराज जी के सत्संग रूपी बगीचे की कलिकाओं और पुष्पों की सुगंधि से अपने को सुवासित करते रहें।

❋

कर ले भजन कमाई

कर ले भजन कमाई, क्या है भरोसा इस देह का॥

स्वांस पवन का अंदर बाहर रहता आना-जाना।
बाहर का बाहर रह जावे, अंदर नहीं ठिकाना।
काया किस काम आई, क्या है भरोसा इस देह का॥

स्वारथ वाले हैं जग वाले, जा शमसान जलावें।
हंस बिचारा जाय अकेला, कोई साथ नहीं जावे।
प्रीति किसने निभाई, क्या है भरोसा इस देह का॥

करी कमाई खो दई सारी, अपना आपा भूला।
मोह माया की बांध गाठड़ी, धन दौलत पै फूला।
तेरी कोन्या भलाई, क्या है भरोसा इस देह का॥

सतगुरु का ले नाम, ध्यान सुमिरण हर स्वांस किये जा।
मानुष देह मिली है तुझको, इसको सफल किये जा।
तेरी इसी में भलाई, क्या है भरोसा इस देह का॥

डिवाइन यूनाइटेड ऑर्गनाइज़ेशन के लिए वी. पी. शर्मा द्वारा सोना प्रिंटर्स प्रा.लि.,

F -86/1 ओ. इं. ए., फेज़-1, नयी दिल्ली - 20 में मुद्रित व राज विद्या केन्द्र, शहूरपुर, छत्तरपुर, नयी दिल्ली-74 से प्रकाशित।

***संपादक** - शंकर लाल गोयल*

***दूरभाष :** 26654900, 26654921, 26595565, 26595427; **फ़ैक्स** - 26654502; **E-mail :** duopro@vsnl.com*

© डिवाइन यूनाइटेड ऑर्गनाइज़ेशन

सर्वाधिकार सुरक्षित

Delhi Postal Regd. No.
Registered with the Registrar of
for India R

Licence to post without prepayment under U(SW)-01
at New Delhi P.S.O. on 28 & 29 April, 2003

'तुम हिंदुस्तानी हो, तुम विदेशी हो; तुम औरत हो, तुम मर्द हो; तुम बच्चे हो, तुम बूढ़े हो; तुम हिंदू हो, तुम मुसलमान हो ...' — इन सब बातों में, इन सब टाइटिलों में मनुष्य कौन है? मैं तो सोचता था कि हम सब मनुष्य हैं। तुम भी मनुष्य हो, मैं भी मनुष्य हूं। मैं तो सोचता था, ''ज्ञान दिया जाता है मनुष्य के नाते। ये और सारी चीज़ें कहां से आ गयीं?'' क्योंकि जिस दिन हम इस मनुष्य के नाते को काट-पीट करके हिंदू बना देंगे, मुसलमान बना देंगे; बड़ा बना देंगे, छोटा बना देंगे; बुड्ढा बना देंगे, जवान बना देंगे — ये सब हो जायेगा तो सचमुच में मनुष्य मर जायेगा! और अगर मनुष्य मर गया तो सिर्फ टाइटिल रह जायेंगे, और जो असली चीज़ है वह गायब हो जायेगी। इसलिए मैं कहता हूं कि ''तुम अपना जीवन सफल बना सकते हो।'' जो मूल चीज़ है। यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है।

महाराज जी